चन्दामामा
जुलाई १९९७

डायमण्ड कॉमिक्स डाइजेस्ट
प्राण
पिंकी-8
भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कामिक्स
डायमण्ड कॉमिक्स
प्राण
चाचा चौधरी और सोने की ईंट
अग्निपुत्र अभय और मौत का अण्डा
महाबली शाका और शैतानों की बस्ती
ताऊजी और पिशाचों का षडयन्त्र
मोटू पतलू और दो उचक्के
जेम्स बॉण्ड-58
डायमण्ड कॉमिक्स डाइजेस्ट
फैण्टम-68
मैण्ड्रेक-55
नई अमर चित्रकथायें
• सतवन्त कौर • त्यागराज
• ज्ञानेश्वर • चतुर बीरबल
• मीरा बाई • खुदीराम बोस
• लाल बहादुर शास्त्री
• न्यायप्रिय बीरबल
• पंचतंत्र (ब्राह्मण और बकरा)
• तेनाली राम
नये डायमण्ड मिनी कॉमिक्स
प्राण का–बिल्लू और नटखट मोती
चाचा भतीजा और खौफनाक कंकाल
लम्बू मोटू
फौलादी सिंह
अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें और बचायें रु. 200/- वार्षिक
अंकुर बाल बुक क्लब पर बैठे डायमण्ड कामिक्स पाने का सबसे सरल तरीका है। आप गांव में हैं या ऐसी जगह जहां डायमण्ड कॉमिक्स नहीं पहुंच पाते। बुक द्वारा वी.पी.पी. से हर माह डायमण्ड कॉमिक्स के 6 नये कॉमिक्स पायें और मनोरंजन की दुनिया में खो जाये साथ ही ढेरों इनाम पायें।
हर माह छः कॉमिक्स (48/- रु. की) एक साथ मंगवाने पर 4/- रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री (लगभग 7/-) लगातार 12 वी.पी. छुड़ाने पर 13वीं वी.पी. फ्री।
1 वर्ष में महीने बचत (रु.) कुल बचत (रु.)
12 —— 4/- (छूट) —— 48.00
12 —— 7/- (डाक व्यय) —— 84.00
1 —— 48/- (13वीं वी.पी. फ्री) —— 48.00
सदस्यता प्रमाण पत्र व अन्य आकर्षक —— 20.00
'उपहार', स्टिकर और 'डायमण्ड पुस्तक समाचार' फ्री
200.00
सदस्य बनने के लिए आप केवल संलग्न कूपन को भरकर भेजें और सदस्यता शुल्क के 10 रु. डाक टिकट या मनी आर्डर के रूप में अवश्य भेजें। इस योजना के अन्तर्गत हर माह 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी जिसमें छः कॉमिक्स होगी।
हाँ! मैं "अंकुर बाल बुक क्लब" का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।
नाम
पता
डाक जिला पिनकोड
सदस्यता शुल्क 10 रु. डाक टिकट/मनीआर्डर से भेज रहा/रही हूं।
मेरा जन्म दिन
नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
डायमण्ड कॉमिक्स प्रा. लि. X-30, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-110020
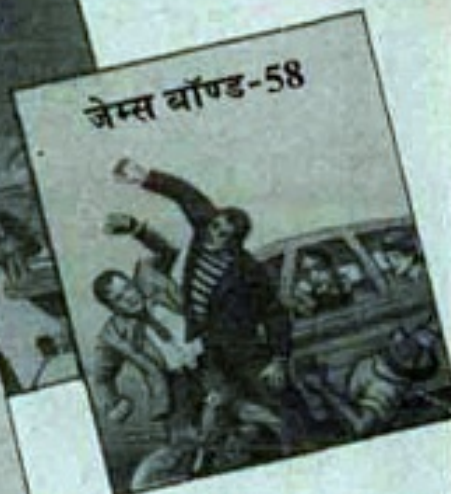
चन्दामामा

जूलाई १९९७

संपादकीय ...७
समाचार-विशेषताएँ ...९
कुमुद की सलाहें ...१०
अनैतिक राज्य ...१५
सम्राट अशोक - ६ ...१७
बड़प्पन ...२५
समुद्र तट की सैर ...३३
सपना सच हुआ ...३७
सुवर्ण रेखाएँ - १४ ...४१
महाभारत - ३७ ...४५
'चन्दामामा' की ख़बरें ...५२
'चन्दामामा' परिशिष्ट - १०४ ...५३
पुराणकाल के राजा ...५४
क्या तुम जानते हो? ...५५
भाग्य-दुर्भाग्य ...५६
साहसी राजकुमार ...६३
फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता ...६६

एक प्रति : ६.००

वार्षिक चंदा : ७२.००
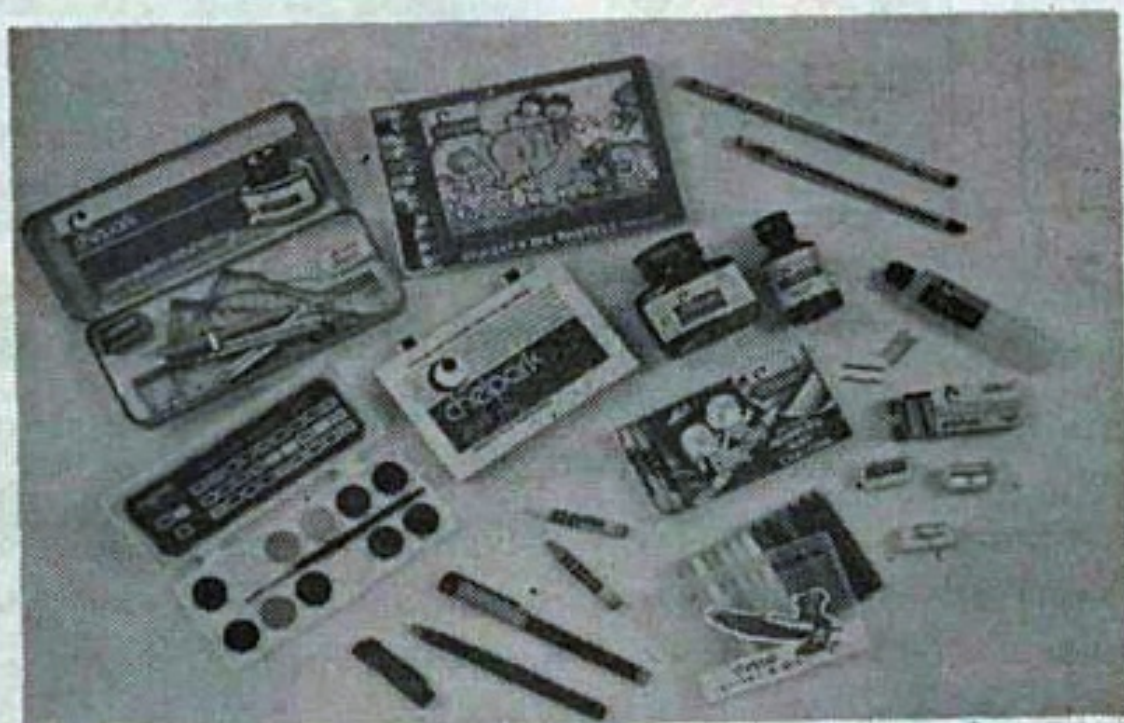
शिक्षाप्रद चार्ट

विद्यार्थियों के दैनिक गृह कार्य के लिए हमने विभिन्न विषयों पर लगभग 100 से अधिक चार्ट प्रकाशित किये हैं। यह चार्ट लगभग 24 × 35 सें.मी. के साईज में उपलब्ध हैं।

मूल्य : 2 रु. प्रत्येक

पूर्ण जानकारी के लिये अपने निकटतम पुस्तक विक्रेता से संपर्क करे
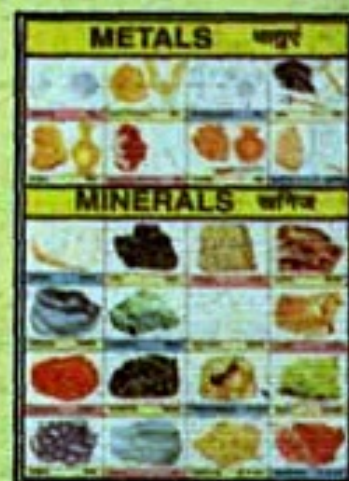
प्रकाशक : इण्डियन बुक डिपो (मैप हाउस), 2937 बहादुरगढ़ रोड़, दिल्ली-6

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

निरक्षरता-निवारण

संसार में विकसित देश हैं और ऐसे भी देश हैं, जो विकास कर रहे हैं। भारत इनमें से एक देश है। यद्यपि हमें स्वतंत्र हुए पचास साल हो गये, फिर भी हमारा देश विकास के मार्ग पर ही है। तब से क्या हमने ठोस प्रगति की? हमने लड़ाकू विमान, प्रक्षेपास्त्र, राकेट, मोटर-गाड़ियाँ, रेल्वे इंजन, कम्प्यूटर तथा उत्तम रेशमी वस्त्र आदि बनाने में प्रगति की। किन्तु देश की चालीस प्रतिशत जनता अब भी दरिद्र है, भूखी है। पचास प्रतिशत से अधिक जनता निरक्षर है। करोड़ों की संख्या में बालक-बालिकाएँ पाठशालाओं में जा नहीं पा रहे हैं। प्रगति के मार्ग पर चलते हुए कोरिया जैसे छोटे देश ने अपने वार्षिक बजेट में शिक्षा के लिए पच्चीस प्रतिशत निधि का विनिधान किया है। भारत २.५ प्रतिशत ही शिक्षा के लिए व्यय कर पाता है। तीस प्रतिशत से अधिक निधि का विनिधान देश की सुरक्षा के लिए होता है। हम यह भूल जाते हैं कि हम उस शत्रु को भूल रहे हैं, जो हम ही में है, हमारे ही साथ है और वह है निरक्षरता।

एक महीने में हम देश की स्वतंत्रता की स्वर्णजयंती मनानेवाले हैं। क्या लाखों, करोड़ों अशिक्षित लोग जानते हैं कि स्वतंत्रता क्या है? क्या वे महसूस कर पाते हैं कि इतनी लंबी अवधि के बाद भी वे निरक्षर हैं।

इस दिशा में भारत के नागरिक होने के नाते हमारे कुछ कर्तव्य हैं। गाँधीजी ने कहा था "हर एक, पहुँचे हर एक के पास।" हम शिक्षितों को चाहिये कि निरक्षरों को पढ़ने व लिखने मात्र की शिक्षा हम दें। भले ही हम उन्हें पंडित न बना सकें।

हम इस स्वर्णजयंती के अवसर पर यह महत्वपूर्ण कार्य शुरु करें तो शताब्दी की पूर्ति के साथ-साथ कुछ हद तक जनता को साक्षर कर पाने में सफल होने की संभावना है।

वर्ष : ४७ **जुलाई १९९७** **अंक : ९**

एक प्रति : रू. ६/- **वार्षिक चन्दा : रु ७२/-**
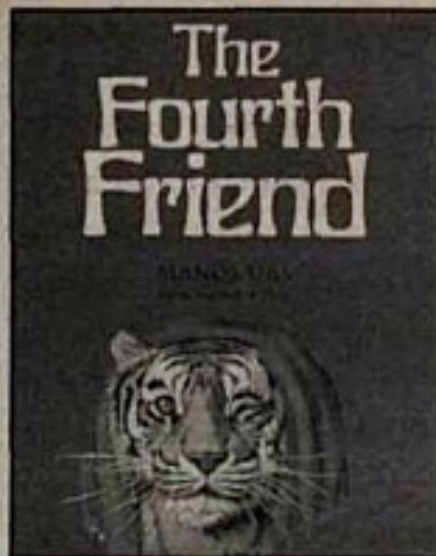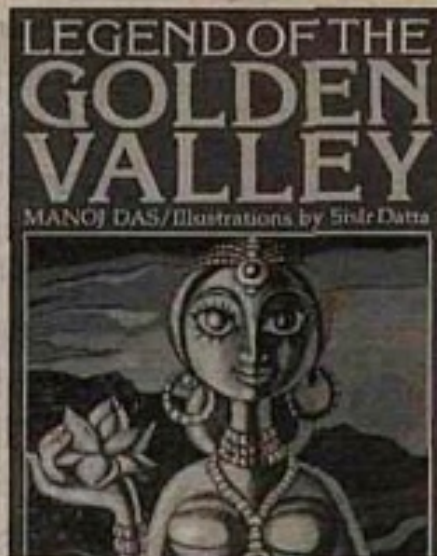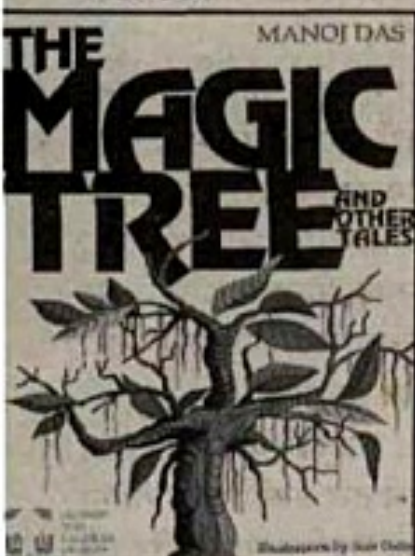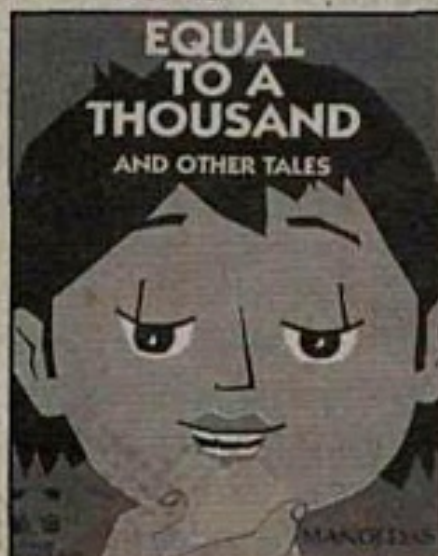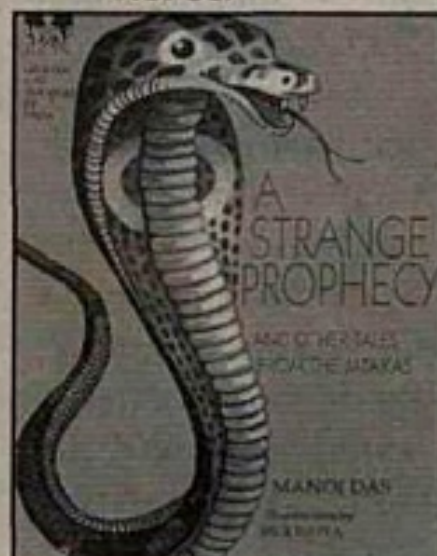
समाचार - विशेषताएँ
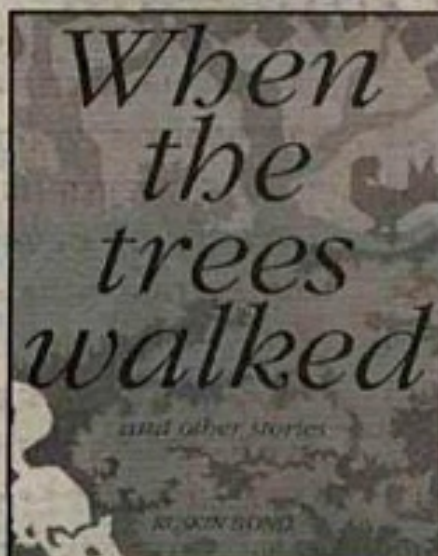
ब्रिटेन के नये प्रधानमंत्री

स्काटलांड के चौदह साल का एक बालक पब्लिक स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रहा है। अपने स्कूल के कठोर अनुशासन का पालन उससे नहीं हो पा रहा है। इसलिए उसने निर्णय लिया कि घर छोड़ दूँ और वेस्ट इंडीस के बहमास भाग जाऊँ। पर ऐसा नहीं हो पाया। यह तीस सालों के पहले की बात है। अब वह बालक बड़ा होकर ब्रिटेन का प्रधान मंत्री बना और १०, डौनिंग गली में निवास कर रहा है।

उनका नाम है टोनी ब्लेयिर। मई १ को ब्रिटेन में जो आम चुनाव हुए, उसमें टोनी ब्लेयिर की अध्यक्षता में लेबर पार्टी ने अभूतपूर्व विजय प्राप्त की। उसने सत्तारूढ़ कन्सरवेटिव पार्टी को हराया और शासन की बागडोर संभाली। हौस आफ कामन्स के प्रतिनिधियों की कुल संख्या है ६५९। इस चुनाव में लेबर पार्टी के ४१९, सत्तारूढ़ कन्सरवेटिव पार्टी के १६३ तथा लिबरल डेमाक्रेटस के ४५ उम्मीदावार जीते। शेष विजेता हैं, कुछ राष्ट्रीय दल के तथा कुछ स्वतंत्र उम्मीदवार।

ब्लेयिर के माता-पिता कन्सरवेटिव पार्टी के सदस्य थे। ब्लेयिर का जन्म १९५३ में हुआ। स्कूल की पढ़ाई समाप्त करने के बाद वे कानून की शिक्षा पाने आक्सफर्ड विश्वविद्यालय में भर्ती हुए। सेयिंट जान्स कालेज उनकी विचार-पद्धति में परिवर्तन ले आया और उनके दृष्टिकोण को विस्तृत किया। अध्यापकों तथा सहपाठियों के विचारों से वे बहुत प्रभावित हुए। लेबर पार्टी में शामिल होने में उनके इन विचारों की प्रेरणा का महत्वपूर्ण पात्र है। वे मज़दूर संघ संबंधी कानून में उत्तम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश करने के पहले वे कुछ समय तक वकील रहे।

१९८३ में लेबर पार्टी के प्रतिनिधि बनकर इन्होंने हौस आफ कामन्स में प्रवेश किया। उस समय वे सबसे छोटी उम्र के संसद के सदस्य थे। १९९२ में लेबरपार्टी ने जब 'षाडो केबिनेट' का आयोजन किया, तब उन्होंने शांति व सुरक्षा शाखा संभाली। उसके उपरांत वे पार्टी की राष्ट्रीय निर्वाहण समिति के सदस्य हुए। १९९४ में वे लेबर पार्टी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। १९०६ में स्थापित लेबरपार्टी के वे बीसवें अध्यक्ष हैं। आम चुनावों के पहले संपन्न अभिप्राय सर्वेक्षण में ६१ प्रतिशत लोगों ने उन्हें देश का प्रधानमंत्री चुना। पूर्व प्रधान मंत्री जान मेजर को केवल २१ प्रतिशत वोट मिले।

टोनी ब्लेयिर ने कल्पना भी नहीं की थी कि लेबर पार्टी की इतनी भव्य जीत होगी। लोगों को लेबर पार्टी के जीतने की पूरी आशा थी किन्तु उन्होंने सोचा तक नहीं कि कन्सरवेटिव पार्टी इतनी क़रारी चोट खायेगी।

जब विजय का दृढ़ीकरण हुआ तब अपने घर के सामने इकट्ठी हुई उत्साही भीड़ को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा "हमारे देश में नवोदय का प्रारंभ हो गया। कुछ मुख्य क्षेत्रों में हमें विशेष परिश्रम करना होगा। मुख्यतया हमारे शिशुओं की विद्या तथा उनके कल्याण की योजनाओं का आधुनीकरण होना चाहिये। राष्ट्रीय आरोग्य के परिरक्षण के लिए आवश्यक व सही सुविधाओं का प्रबंध होना चाहिये। हमें ऐसी अत्यंत आवश्यक योजनाओं पर दृष्टि केंद्रित करनी होगी।"

४६ सालों की उम्र के टोनी ब्लेयिर इस शताब्दी के सबसे कम उम्र के प्रधानमंत्री हैं। यह उनकी विशिष्टता ही कही जा सकती है। १८१२ में लार्ड लिवरपूल अपने ४२ वर्ष में ब्रिटेन के प्रधान मंत्री बने।

कुमुद की सलाहें

कुमुद, कुंदनपुर में नया-नया आया। उसके पड़ोसी प्रदीप के बारे में सबका कहना है कि वह बहुत ही विद्यावान और बुद्धिवान है। कुमुद के घर की तरह उसका भी घर बड़ा है, दस एकड़ की उसकी भी ज़मीन है, सुंदर-सुशील पत्नी है, एक बेटा और बेटी भी है, दस लाख नक़द भी है। दोनों एक ही उम्र के भी हैं।

जिस दिन कुमुद आया, उसी दिन वह प्रदीप से मिला और कहा "तुम्हारे बारे में जानने के बाद ही मैं तुम्हारे पड़ोस में रहने आया। इस गाँव में बसने के लिए मुझे तुम्हारी सलाहें चाहिये।"

प्रदीप ने मुस्कुराकर कहा "मैंने क़सम खायी कि किसी को भी सलाहें नहीं दूँगा। बुरा न मानना। सलाहें न भी दूँ तो क्या हुआ? हम मित्र बनकर रहेंगे।"

कुमुद ने मुस्कुराकर कहा "सलाहें न दी जाएँ तो दोस्ती गाढ़ी नहीं होती। तुम सलाहें न दो, पर मैं तुम्हें सलाहें देता रहूँगा।"

"मुझे किसी की भी सलाहें नहीं भातीं। इसी कारण मैंने क़सम खायी थी कि दूसरे को सलाहें नहीं दूँगा। तुम्हारी सलाहों से कोई प्रयोजन नहीं होगा और अक़्लमंद आदमी बिना प्रयोजन के कोई काम नहीं करता।" प्रदीप ने कुमुद को सावधान किया।

"मैं तुम्हें सलाहें दूँगा। साबित करूँगा कि तुम्हारे अभिप्राय ग़लत हैं।" कुमुद ने तैश में आकर उसे ललकारा।

तब प्रदीप मुस्कुराकर चुप रह गया।

बाद जब दोनों एक बार मिले तब कुमुद ने प्रदीप को सलाह दी "तुम्हारे पास लाख रुपये हैं। कर्ज़ दो, ब्याज वसूल करो और अपनी पूँजी बढ़ाओ।"

"जो कर्ज़ लेते हैं, उनकी अपनी अनेकों समस्याएँ होती हैं। इसलिए वे वादे के

प्रवीण गुप्ता

मुताबिक रक़म वापस नहीं दे पाते। उनपर दया दिखाकर चुप रह जाएँ तो वे इसे हमारी क़मज़ोरी समझते हैं और हमें धोखा देते हैं। इसीलिए जो ब्याज पर रक़म देकर व्यापार करते हैं, उनमें दया, करुणा आदि रत्ती भर भी न हों। कठोरता के साथ उन्हें व्यवहार करना होगा। यह मुझसे नहीं होगा। नुक़सान हो तो हो जाए, इसकी मुझे चिंता नहीं।'' यों प्रदीप ने कुमुद की सलाह का तिरस्कार किया।

थोड़े दिन चुप रहने के बाद कुमुद ने प्रदीप को एक और सलाह दी ''तुम्हारे बेटे ने उच्च शिक्षा पायी। उसे शहर में अच्छी नौकरी मिल सकती है। उसे शहर भेजो। अपनी बेटी के लिए घर-जँवाई ढूँढो। वह खेती-बारी का काम संभालेगा। इस बुढ़ापे में बहू की देखरेख व उसके तानों से अपने को बचा सकते हो। बहू अपने ससुर को अपना शत्रु मानती है। बेटियाँ अपने माँ-बाप की सेवा करती हैं और उन्हें सुखी रखने की भरसक कोशिश करती हैं।''

कुमुद की यह सलाह प्रमोद को सही नहीं लगी। पूछा कि अच्छा न लगने का क्या कारण है, तो उसने कहा ''पति-पत्नी के बीच में भेद-भाव, मनमुटाव या कोई रहस्य होना नहीं चाहिये। मिल-जुलकर रहने पर ही उनका दांपत्य जीवन सुखी होगा। ऐसा न होने पर पत्नी, पति को पराया समझने लगेगी। अपना नहीं समझेगी। बेटी का ससुराल में ही रहना अच्छा संप्रदाय है। घर-जँवाई को घर में बिठाकर कोई भी सुखी नहीं रह सकता। अब रही बहू की बात। यह नहीं भूलना चाहिये कि बहू पराये के घर से आयी है। हमें सदा याद रखना चाहिये कि वह हमारे साथ रहने आयी है। उसे अपना समझना हमारा फ़र्ज़ है। इसे याद रखें तो मैं नहीं समझता कि घर में कोई खलबली मच जायेगी।''

कुछ और दिन बीत गये। उन प्रांतों में लुटेरों की संख्या बढ़ती गयी। वे लोगों को तरह-तरह से सताने लगे। अचानक लुटेरे किसी एक गाँव में प्रवेश करते और माल लूटकर चले जाते। पुलिस को यह मालूम हो, इसके पहले ही यह काम हो जाता था। इस कारण हर गाँव के युवक संगठित हुए। उन्होंने सैनिक-प्रशिक्षण पाया और हथियार लेकर गाँव की रक्षा करने आगे बढ़े। फिर भी लुटेरे अचानक धावा बोल देते थे और

माल लूटकर ले जाते थे। कहीं ग्रामीण जीतते थे तो कहीं लुटेरे।

यथावत् कुमुद ने एक और बार प्रदीप को सलाह दी "पूरा धन तिजोरी में हो तो लुटेरे लूटकर चले जाएँगे। जब तक हम पर यह आफ़त बनी रहती है तब तक अच्छा इसी में है कि हम अपना धन, गहने आदि पिछवाड़े में गड्ढा खोदकर गाड दें और सुरक्षित रखें। तब जाकर लुटेरे हमारा कुछ बिगाड नहीं सकते।"

प्रदीप ने कुमुद की इस सलाह का भी तिरस्कार करते हुए कहा "सब कुछ गड्ढे में छिपा दें तो तिजोरी खाली दीखेगी। लुटेरों को शक होगा। हमसे सच उगलवायेंगे। तुम्हारी सलाह मुझे सही नहीं लगी।"

कुमुद ने पूछा "तो हमें क्या करना चाहिये?"

"मैं जो करूँगा, तुमसे बतानेवाला नहीं हूँ। तुमसे पूछूँगा भी नहीं कि तुम क्या करने जा रहे हो?" प्रदीप ने कहा।

कुछ और दिन गुज़र गये। ज़मींदार मोहनराय की माँ बीमार पड़ गयी। सबने समझा, वह मर जायेगी। किन्तु वह बिल्कुल स्वस्थ हो गयी। जल्दी ही उसके सत्तर साल पूरे होनेवाले हैं। इस सिलसिले में मोहनराय बड़े पैमाने पर उत्सव मनानेवाला है। इस उत्सव में भाग लेने के लिए उसने अड़ोस-पड़ोस के सब गाँववालों को आह्वान दिया। अतिथि के आदर-सत्कार के लिए अच्छे प्रबंध किये। पैदल आनेवालों के लिए ठंडक पहुँचानेवाले मंडप बनवाये। बैलगाड़ियों में आनेवालों के लिए आराम से रहने का इंतज़ाम करवाया। घोड़ा-गाड़ियों पर जो आयेंगे, उनके लिए भी बढ़िया इंतज़ाम किया।

कुमुद ने जब यह सब सुना, तब प्रदीप से कहा "तुम बड़े अक़्लमंद हो। ज़मींदार के यहाँ नौकरी करोगे, उससे मैत्री बढ़ावोगे तो तुम्हारी अक़्लमंदी में निखार आयेगा। तुम्हारा सिक्का जमेगा। एक घोड़ा-गाड़ी खरीदो। उसमें बैठकर उत्सव में जाओ। विशिष्ट सत्कार पाओ। लौटने के बाद घोड़ा-गाड़ी को यातायात का साधन बनाओ और धन कमाओ।"

प्रदीप ने हँसकर कहा "ज़मींदार अतिथियों के ओहदे के आधार पर ही आदर-सत्कार कर रहा है। किसी की अक़्ल से उसे कुछ लेना-देना नहीं है। घोड़ा-गाड़ी में बैठकर मैं

अपना ओहदा बढ़ा लूँ तो उस ओहदे के अनुसार ही मुझे पुरस्कार देने होंगे। ज़मींदारों से दोस्ती करना तलवार की धार पर चलने के समान है। उनसे दूर रहने में ही भलाई है। अगर मैं नहीं जाऊँगा तो शायद बदनाम हो जाऊँगा। मुझपर कीचड उछाला जायेगा। इसलिए पैदल जाऊँगा। कोई मुझे पहचानेगा भी नहीं। उत्सव में उपस्थित होकर चला आऊँगा। अब रही, घोडा-गाड़ी द्वारा व्यापार की बात। मैं किसान हूँ। व्यापार करना मुझे नहीं आता।'' यों कहकर उसकी इस सलाह का भी तिरस्कार किया।

''हम पैदल चलें तो कोई बात नहीं। पर हमारी स्त्रीयाँ पैदल कैसे जाएँगी? तुम सठिया गये हो।'' कुमुद ने चिढ़ते हुए कहा।

''तुम्हारे बारे में मैं नहीं जानता। किन्तु इस विषय में तुम्हारी सलाह के मुताबिक कुछ नहीं करूँगा। ज़मींदार के यहाँ उत्सव में भाग लेने के लिए मैं अकेले ही जाऊँगा। अपने परिवार को नहीं ले जाऊँगा।'' प्रदीप ने भी चिढ़ते हुए कहा।

एक क्षण रुककर कुमुद ने कहा ''पड़ोसी हैं। कुछ विषयों में ही सही, साथ-साथ, मिल-जुलकर रहना चाहिये। मैं चाहता हूँ उत्सव में अपनी पत्नी व संतान को भी ले जाऊँ। अगर तुम्हारे लोग नहीं आयेंगे तो मेरे भी लोग आने से इनकार करेंगे। तुम्हें मेरे साथ आना ही होगा'' कहकर वह वहाँ से चला गया।

कुमुद और प्रदीप मात्र ज़मींदार के गाँव गये और उत्सव में भाग लेकर लौटे। वहाँ बड़ी भीड़ थी, इसलिए थोड़ी-बहुत असुविधा

हुई। जो स्त्रीयाँ आयीं, उन्हें भी तक़लीफ़ों का सामना करना पड़ा। उस भीड़ में भाग-दौड़ के कारण कुछ घायल भी हुए। कुछ लोग बीमार हुए तो उन्हें शहर के अस्पतालों में भर्ती करना पड़ा। इसके लिए अतिथियों के घोड़े-गाड़ियों और बैल-गाड़ियों का इश्तेमाल करना पड़ा। अतिथि-सत्कार से भी अधिक, अतिथियों से ज़मींदार को बहुत भेंटें मिलीं।

कुमुद और प्रदीप को लगा कि वहाँ रहना असुविधाजनक है, तो पहले ही निकल गये और आधी रात होते-होते कुंदनपुर पहुँचे।

उस समय कुंदनपुर में खलबली मची हुई थी। उन्हें मालूम हुआ कि लुटेरे चुपचाप गाँव में घुस गये। एक घर में प्रवेश किया और तिजोरी खोली। उसमें कुछ नहीं पाया

तो घर के सब लोगों को उन्होंने मारा-पीटा। फिर बाद कुमुद के घर में घुसे। उसकी तिजोरी में से दस हज़ार रुपये, दो तोलों का सोना लूट लिया। जब वे भागने लगे तब युवसेना ने लुटेरों को पकड़ लिया और कुमुद की वस्तुएँ उसके घरवालों को लौटा दीं। लुटेरों के हाथों पीटे गये लोगों की स्थिति नाजुक है। सबकी चिकित्सा हो रही है।

यह सब सुनने के बाद प्रदीप ने कुमुद से कहा "तुम बड़े भाग्यवान हो।" "यह मेरा भाग्य नहीं, यह मेरी अक़्लमंदी है" कुमुद ने गर्व-भरे स्वर में कहा। "तुम्हारी अक़्लमंदी की भी क्या कहूँ। तुम्हारी अक़्लमंदी तो प्रयोजनहीन कार्यों में ही खप रही है, व्यर्थ हो रही है। जब तक मुझे तुम सलाहें देना नहीं छोड़ोगे तब तक मैं तुम्हारी अक़्लमंदी की दाद नहीं दूँगा। तुम्हारी जो भलाई हुई है, वह केवल तुम्हारे भाग्य के कारण ही हुई है।" प्रदीप ने कहा।

इसपर कुमुद मुस्कुराता हुआ बोला "तुम्हें सलाहें देने में ही मेरा प्रयोजन है। तुमने समझा कि मैं तुम्हें सलाहें दे रहा हूँ। सचमुच मैंने एक नयी पद्धति में तुमसे सलाहें माँगीं। मैं व्याज देने का व्यापार करना चाहता था। तुमने मना किया। घर-जँवाई लाना चाहा। तुमने मना किया। तुम्हीं ने बताया कि लुटेरों से धन कैसे बचाया जाए। ज़मींदार के यहाँ जो उत्सव हुआ, उस संबंध में भी मैंने तुम्हारी सलाहों का पालन किया। तुम तो यही समझते रहे कि मैं तुम्हें सलाहें दे रहा हूँ, पर यह नहीं सोचा कि मैं तुमसे सलाहें ले रहा हूँ। क्या इससे मेरी अक़्लमंदी साबित नहीं होती?"

प्रदीप का चेहरा फीका पड़ गया। उसने कहा "मानता हूँ कि तुम सचमुच अक़्लमंद हो। मेरी जानकारी के बिना मुझी से सलाहें लीं और उनका पालन किया। इतना ही नहीं, तुमने साबित भी कर दिया कि मेरी सलाहों का प्रयोजन है। आगे से तुम सीधे भी सलाहें माँगोगे तो अवश्य दूँगा। क्योंकि अब मुझे विश्वास हो गया कि मेरी सलाहों से दूसरों की भलाई होती है, लाभ होता है।"

तब से कुमुद और प्रदीप ने मरते तक अच्छे पड़ोसियों की तरह जीवन व्यतीत किया।

अनैतिक राज्य

भूपाल देश में अनीति सीमाएं पार कर गयी। सब के सब राजकर्मचारी घूसख़ोर बन गये। परिस्थिति इस हद तक पहुँच गयी कि घूस दिये बिना कोई भी काम होता नहीं था। गुप्तचरों के द्वारा राजा ने यह विषय जाना और मंत्री को बुलाकर उससे सलाह-मशविरा किया।

राजा ने कहा "महामंत्री, यह विषय जानते ही मेरा मन बहुत ही व्याकुल है। आप जो भी, जैसे भी करना चाहते हैं, कीजिये और इस अनीति की राक्षसी को हमारे देश से भगाइये। इसके लिए मैं आपको पंद्रह दिनों की मोहलत दे रहा हूँ।"

पंद्रह दिनों की मोहलत के नियम से मंत्री घबरा गया। उसने फ़ौरन नगर के सब राजकर्मचारियों की बैठक बुलायी। उन्होंने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा "भूपाल देश में अनीति!" उन सबने प्रतिज्ञा की कि हम घूसख़ोरी का अंत करके रहेंगे। मंत्री को मालूम नहीं था कि वे झूठे हैं और नाटक कर रहे हैं। यद्यपि वे अपनी प्रतिज्ञा भूले नहीं थे, फिर भी दूसरे ही दिन से वे यथावत् घूस लेने लगे। जिस बाघ ने लहू का जायका चख लिया हो, भला वह थोड़े ही अपनी इस आदत को छोड़ सकता है? घूस लेने की आदत भी ऐसी ही ख़तरनाक आदत है, जिसे छोड़ना राजकर्मचारियों के लिए संभव नहीं हो पाया। वे घूस लेते ही रहे।

मंत्री ने अपने विश्वस्त घरेलू नौकर-चाकरों द्वारा यह सब जाना। राजप्रासाद से लौटा और आसन में बैठकर गंभीर रूप से सोचने लगा कि इस दिशा में क्या किया जाए? कैसे घूसख़ोरी का अंत किया जाए?

मंत्री की पत्नी ने अपने पति को उदासीन देखकर उससे पूछा कि इस उदासी का कारण क्या है? उसने राज्य में व्याप्त अनीति तथा राजा की आज्ञा का विवरण देते हुए कहा

प्रवीण गुप्ता

"राजा की दी हुई मोहलत दो दिनों में ख़तम होनेवाली है। अनीति अब भी बराबर हो रही है। सबके सब कर्मचारी झूठे और बदमाश हैं। उनकी प्रतिज्ञा झूठी व नाटक मात्र है।"

मंत्री की पत्नी क्षण भर सोचती रही और फिर मुस्कुराकर कहा "इतनी छोटी-सी बात पर आप क्यों इतना परेशान हो रहे हैं। इस जटिल समस्या का परिष्कार-मार्ग यों है।" कहती हुई उसने अपने पति को सुझाया कि क्या करना होगा। पत्नी की बातों पर मंत्री ने खूब सोचा-विचारा। उसे लगा कि वर्तमान परिस्थितियों में इससे बढ़कर कोई सुलभ मार्ग नहीं होगा।

निश्चित अवधि की समाप्ति के दूसरे दिन राजा ने मंत्री का अभिनंदन करते हुए कहा "पंद्रह दिनों में ही आपने घूस की राक्षसी को देश से भगा दिया। अनीति का अंत कर दिया। कल भरी सभा में आपको देशरत्न की उपाधि प्रदान करनेवाला हूँ और आपका सत्कार करनेवाला हूँ।

मंत्री सानंद घर लौटा और अपनी पत्नी को धन्यवाद देता हुआ बोला "तुमने जैसा कहा, राजा को समाचार पहुँचानेवाले गुप्तचरों को भारी बख्शीश दी और उन्हें ग़लत समाचार पहुँचाने में कृतकृत्य हुआ। उनकी बातें सुनकर राजा समझने लगे कि देखते-देखते सब कर्मचारी सदाचारी बन गये। उनकी दृष्टि में यह चमत्कार था। मैंने गुप्तचरों को जो बख्शीश दी, वह रक़म मेरे अधीन काम करनेवाले उच्च कर्मचारी से मैंने वसूल कर ली। उसने यह रक़म अपने अधीन काम करनेवाले कर्मचारियों से वसूल कर ली होगी।"

"क्या आपने कभी सोचा कि हमारे देश में यह अनीति इतने बड़े स्तर पर क्यों व्याप्त है?" पत्नी ने पूछा।

'तुम्ही बताओ' के भाव में मंत्री ने जब अपनी पत्नी को देखा तो वह कहने लगी "अनीति की राक्षसी बहुमुखी है। जो राजा यह भी नहीं जानता कि राजनीति क्या है, जिसमें शासन चलाने की क्षमता नहीं, उसका सिंहासन पर बैठना भी अनीति ही है। इसीलिए देश में अनीति की राक्षसी स्वेच्छा से विहार कर रही है। नंगी नाच रही है।"

जो भी हो, भूपाल देश के सब लोगों को अनीति की आदत पड़ गयी। घूस लेना और देना उनके लिए अति साधारण बात हो गयी।

सम्राट अशोक

६

(मौर्य चक्रवर्ती बिन्दुसार जब अस्वस्थ था, तब तक्षशिला में विद्रोह शुरु हुआ। बिन्दुसार के ज्येष्ठ पुत्र सुशेम ने विद्रोह को कुचल डालने में कोई अभिरुचि नहीं दिखायी। कनिष्ठ पुत्र अशोक ने यह जिम्मेदारी संभाली और थोड़ी-सी सेना के साथ तक्षशिला गया। एक ही दिन में विद्रोह को कुचल डाला। विद्रोहियों को मृत्यु-दंड दिया और राजधानी लौटने लगा। राजधानी में पहुँचने के पहले ही अशोक की हत्या की योजना सुशेम ने बनायी, किन्तु वह विफल हुई।) -बाद

नगर की सरहदों पर जो दुर्घटना हुई, उसका पूरा ब्योरा प्रधानमंत्री भल्लाटक ने राजा बिंदुसार को दिया। तब बिंदुसार ने आश्चर्य व खेद प्रकट करते हुए कहा :-"इस दुर्घटना के विवरण सुनकर मेरे मन को बड़ा सदमा पहुँचा। अशोक सुरक्षित है न ? वह बाल-बाल बच गया न ? अशोक के व्यूह-कौशल तथा उसकी विजय के विवरण जानने के लिए बहुत ही उत्सुक होकर आप ही की प्रतीक्षा कर रहा था। इस संदर्भ में मैं अशोक की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता, जिसने एक ही दिन में विद्रोह को कुचल डाला। उससे मिलने के लिए मैं बहुत आतुर था। पर सुनना पड़ा यह बुरा समाचार। अब हमें जानना होगा कि इस दुर्घटना के पीछे कौन हैं और किस उद्देश्य से किया गया है।"

प्रधानमंत्री मौन ही रहा। तब राजा ने कहा "मुझे लगता है कि तक्षशिला के

"हाँ महाराज, आपकी कल्पना सही है" प्रधानमंत्री ने कहा। प्रधानमंत्री का समाधान सुनकर राजा क्षण भर के लिए निश्चेष्ट रह गया। उसका मन यह जानने के लिए आतुर था कि कौन-कौन लोग इस दुर्घटना के मूल में हैं। उसने सपने में भी नहीं सोचा कि उसके राज्य में ऐसे भी दुष्ट हैं, जो राजपरिवार के सदस्यों के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे हैं, उनका अंत करने पर तुले हुए हैं।

उस विशाल राजमंदिर में भयंकर चुप्पी छा गयी। थोड़ी देर बाद नगरपालक वहाँ आया और राजा व प्रधानमंत्री को नमस्कार किया। उसका चेहरा उदासी से भरा हुआ था।

राजा ने पूछा "आपकी तहक़ीक़ात ख़तम हो गयी?"

विद्रोहियों के चंद प्रतिनिधि राजधानी में मौजूद हैं। अशोक ने सुनायास ही इस विद्रोह को कुचल डाला। इसपर वे प्रतिनिधि उससे नाराज़ हुए होंगे और उससे जलते होंगे। अशोक को मार डालने के इस षड्यंत्र के पीछे उन्हीं का हाथ होगा। महामंत्री, आपका क्या अभिप्राय है?"

"बाँध पर से जिन्होंने सेना पर पथ्थर लुढ़काये, उनमें से कुछ पकड़े गये। हमारे नगरपालक उनसे कैफ़ियत तलब कर रहे हैं। किसी भी क्षण वे यहाँ आ सकते हैं।" प्रधान मंत्री ने कहा।

"इसका यह मतलब हुआ, आप इन मामलों में कुछ और लोगों पर भी शक कर रहे हैं।" राजा ने प्रधानमंत्री की ओर बड़ी ही आतुरता से देखते हुए पूछा।

नगरपालक ने धीरे कहा "हाँ महाराज।"

राजा ने पूछा "वह दुर्घटना संयोगवश ही हुई न?"

"नहीं प्रभू, बाँध के पथ्थरों को जान-बूझकर ढीला कर दिया और उनके नीचे लकड़ियों की पाटियाँ रख दी गयीं। नीचे से जैसे ही पाटियाँ हिला दी गयीं, पथ्थर लुढ़कते हुए सेना पर आ गिरे। लकड़ियों की इन पाटियों को इस प्रकार रखने में काफ़ी मेहनत उठानी पड़ती है। कम से कम सौ आदयियों को इस काम पर लगाया होगा। इससे यह स्पष्ट है कि इस षड्यंत्र के पीछे सुनिश्चित योजना है। शत्रुओं ने बड़ी ही मुस्तैदी के साथ यह योजना बनायी, जिससे लोगों को लगे कि यह घटना संयोगवश हुई।" नगर-पालक ने कहा।

"विश्वास ही नहीं हो रहा है। दलनायक और हमारे कुछ सैनिक सबेरे से उद्यानवन के पास ही थे। उनसे छिपकर इतनी बड़ी संख्या में लोग इस काम पर कैसे लगे हुए थे?" राजा ने पूछा।

"हमारे दलनायकों में से एक ने अपराधियों को सहायता पहुँचायी और उन्हें पूरा-पूरा सहयोग दिया। उसी के पर्यविक्षण में ये सब काम हुए।" नगरपालक ने धीमे स्वर में कहा।

"इतना दुत्साहस। आज तक मौर्य सेना के किसी भी दलनायक ने इतना बड़ा राजद्रोह करने का साहस नहीं किया।" राजा ने आश्चर्य प्रकट किया।

"मौर्य सिंहासन पर आसीन होनेवाले युवराज ही, जब किसी दलनायक को लालच देकर, प्रलोभन देकर उसके द्वारा ऐसी करतूत कराना चाहें तो कोई भी दलनायक राजद्रोह करने पर तुल जाए तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है?" नगरपालक ने सविनय कहा।

राजा ने पूछा "क्या कह रहे हो तुम?"

"महाराज मुझे क्षमा करें। मेरे न्याय-अन्वेषण में जो सत्य मैंने जाने, उन्हें आपको बताना मेरा प्रथम कर्तव्य है। अत: मैं जो कह रहा हूँ, सच कह रहा हूँ। सच के सिवा कुछ और कहने का साहस ही नहीं कर सकता।" नगरपालक ने कहा।

थोड़ी देर के लिए वहाँ शांति छा गयी। अपने को संभालते हुए राजा ने कहा "तुमपर मुझे पूरा विश्वास है। तुमने यह सत्य मुझसे नहीं छिपाया, इस सत्य को निर्भीकता से मेरे सम्मुख प्रकट किया, इसके

लिए और तुम्हारी राजभक्ति के लिए हृदय पूर्वक मैं तुम्हारा अभिनंदन कर रहा हूँ।" राजा ने कहा।

"कोई अंदाजा भी लगा नहीं पायेगा कि आपको यह विषय बताते हुए मुझपर क्या बीता। मेरा हृदय दुख-भार से दबा जा रहा था; पीड़ा से छटपटा रहा था। फिर भी अपने कर्तव्य को निभाने के लिए अपने दिल को पथ्थर बनाकर यहाँ आया। प्रभु मुझे क्षमा करें।" नगरपालक ने दबे स्वर में कहा।

प्रधानमंत्री तब तक मौन हो उन दोनों की बातचीत ध्यान से सुन रहा था। उसने नगरपालक से कहा "अपने दिल को और कठोर बनाने का समय अब आ गया है। अपने महाराज के लिए, अपने राज्य के लिए

अपने राजपरिवार के गौरव की रक्षा के लिए इस दुर्घटना का रहस्य बिल्कुल गुप्त रखना होगा। इस षड्यंत्र के बारे में किसी को भी कुछ भी मालूम होना नहीं चाहिये। पकड़े गये षड्यंत्रकारी, हिरासत में लिया गया दलनायक अथवा इससे संबंधित कोई भी व्यक्ति कुछ नहीं बोलेगा। ऐसे वातावरण की सृष्टि की जाए, मानों ऐसी घटना ही नहीं घटी।'' फिर राजा से कहा ''मैं समझता हूँ कि महाराज मेरी बातों से सहमत हैं।''

बिंदुसार ने दुख से भरे क्षीण स्वर में कहा ''महामंत्री की समझदारी व विवेक का मैं आदर करता हूँ।''

नगरपालक ने महामंत्री से दबे स्वर में कहा, मानों अपने ही आप बड़बड़ा रहा हो ''वे सब कुल मिलाकर सौ से ज़्यादा होंगे।'' उसके पूछने का यह मतलब था कि इतने लोगों को चुप कराना कैसे संभव है?

''हाँ तो क्या हुआ? शाश्वत रूप से उनके मुँह बंद करवा दीजिये। उन्हें फाँसी पर लटका दीजिये। यह काम कल सूर्योदय के पहले ही हो जाए। सबेरे लोगों को बताया जाए कि अशोक की हत्या के षड्यंत्र के पीछे तक्षशिला के विद्रोहियों का हाथ है। घोषणा की जाए कि वे सब के सब पकड़े गये और वे सूली पर चढ़ा दिये गये'' प्रधान मंत्री ने गंभीर स्वर में नगरपालक से बताया।

''आपका निर्णय सही है, परंतु'' नगर पालक कुछ और कहना चाहता था कि प्रधानमंत्री ने पूछा ''अपने राज्य की रक्षा के लिए बेशुमार आदमियों को भी मार डालने के लिए आप झिझकेंगे ? अपने देश की रक्षा के लिए युद्ध-क्षेत्र में क्या हम हज़ारों शत्रुओं को भी नहीं मारते? ये दुष्ट उन शत्रुओं से भी अधिक खतरनाक हैं। फिर आपकी यह

झिझक कैसी?''

''किसी भी हालत में पीछे नहीं हटूँगा।'' दृढ़ स्वर में नगरपालक ने कहा। ''यह जानी हुई बात है कि युवराज सुशेम और अशोक के बीच मन -मुटाव है; वे एक-दूसरे को नहीं चाहते; एक-दूसरे के कट्टर शत्रु हैं। पर अगर इस संबंध में लोगों को और विशद रूप से मालूम हो जाए तो देश के विच्छिन्न होने का खतरा है। अब जिन्हें क़ैद कर लिया गया है, उन्हें छोड़ दें तो इन अफ़वाहों को और बढ़ा-चढ़ाकर देश भर व्याप्त करेंगे। है न?'' प्रधान मंत्री ने पूछा।

नगरपालक ने दृढ़ स्वर में कहा ''आपने सच बताया।''

राजा ने आज्ञा दी ''आधी रात को निधड़क अपना कर्तव्य निभाओ।''

नगरपालक राजा और प्रधानमंत्री को प्रणाम करके वहाँ से चला गया। राजभवन से बाहर आने के पहले ही सुशेम, नगरपालक के पास आया और कहा ''सुनने में आया कि क़ैदी दलनायक ने कहा कि अशोक की हत्या के षड्यंत्र के पीछे मेरा भी हाथ है। क्या यह सच है?'' नगरपालक ने कहा ''हाँ, यही उसने बताया था।''

''झूठ, सरासर झूठ। उस झूठे को मृत्यु-दंड मिलना चाहिये'' सुशेम चिल्ला उठा।

उसकी इस बात पर नगरपालक थोड़ी देर तक निश्चेष्ट रह गया। मन ही मन उसे इस बात का दुख हुआ कि ऐसा कपटी देश का राजा बननेवाला है।

सुशेम ने फिर पूछा ''दलनायक का कहा झूठ क्या महाराज को मालूम हुआ?''

''दलनायक की कही बातों से महाराज को परिचित कराना राजकर्मचारी होने के नाते मेरा कर्तव्य है। मेरा धर्म है युवराज।'' नगरपालक ने कहा।

"क्या महाराज ने इसे सच मान लिया? उसके बयान का विश्वास किया?" सुशेम ने पूछा। "मैं इस विषय में कुछ नहीं कह सकता" नगरपालक ने कहा।

"अच्छा, अब बताओ कि यह विषय सुनते ही महाराज ने क्या कहा?" सुशेम ने ज़ोर देते हुए पूछा।

"यह बताना मुश्किल है। परंतु हाँ, एक बात जानता हूँ। महाराज ने निर्णय लिया कि दलनायक सहित जितने भी दुष्टों ने इस कुत्सित कार्य में भाग लिया, मौत के घाट उतारे जाएँ।" नगरपालक ने कहा।

"बहुत अच्छा। महाराज ने अद्वितीय निर्णय लिया। देखा, मेरी ही तरह मेरे पिताश्री भी कितने विवेकी हैं।" कहकर आनंद से तालियाँ बजाने लगा।

नगरपालक आपे से बाहर हो गया। पर अपने को काबू में रखते हुए कहा "आपने सच कहा युवराज।"

तभी मगध-सेनाधिपति राज-दर्शन के लिए जाते-जाते वहाँ आया। उसने सुशेम को प्रणाम किया। नगरपालक ने सेनाधिपति को नमस्कार करते हुए कहा "मैं आप ही से मिलने आ रहा था।"

"यहीं ठहरो, अभी आता हूँ" कहकर सेनाधिपति आगे बढ़ने लगा। "सुना कि महाराज ने आपको और मुझे उनसे मिलने के लिए एकसाथ आने को कहा है।" कहकर वह सेनाधिपति के पीछे-पीछे तेज़ी से जाने लगा।

महाराज ने उन्हें देखते ही कहा "अच्छा हुआ, आप एकसाथ मेरे पास आये। आपसे एक ज़रूरी बात कहनी है, बैठिये।"

प्रधानमंत्री, सेनाधिपति, सुशेम आसनों पर बैठ गये। कुछ क्षणों के बाद सुशेम को देखते हुए महाराज ने कहा "मैंने जो सुना, उसका विश्वास ही नहीं कर पा रहा हूँ पुत्र।"

"मुझे नहीं मालूम कि आपने क्या सुना?" निर्लज्ज सुशेम ने कहा। "तुम्हारी इस बात का भी मैं विश्वास नहीं करता। क्योंकि तुम्हें अच्छी तरह से मालूम है कि मैंने क्या सुना। मैं स्वयं यह बता नहीं पाऊँगा। समय ही यह बता सकेगा। काल ही इसका निर्णय करेगा कि क्या किया जाना चाहिये। अब हम वर्तमान विषय पर चर्चा करेंगे तो अच्छा होगा। प्रधानमंत्री और सेनाधिपति का अभिप्राय है कि हमारी ही सीमाओं पर स्थित मुख्य अवंती राजधानी

उज्ञयनी, किसी युवराज को राज-प्रतिनिधि के रूप में भेजना उचित होगा । तुम और अशोक के अलावा कोई इस पद योग्य नहीं हैं । एक और मुख्य बात भी है, जिसे तुम ध्यान से सुनो । हम लोग चाहते हैं कि जब तक तुम दोनों पारस्परिक शत्रुता की भावना को नहीं भुलाओगे, जब तक विवेकपूर्ण भाइयों की तरह व्यवहार नहीं करोगे, तब तक तुम दोनों का दूर ही रहना देश के लिए, राजपरिवार के लिए श्रेयस्कर है ।''

सुशेम मौन ही रहा ।

राजा ने पूछा ''तुम उज्ञयनी जाओगे?''

सुशेम ने कहा ''मैं यहीं रहूँगा ।''

''ज्येष्ठ पुत्र हो, अतः निर्णय लेने का अधिकार तुम्हें दिया । अशोक ही उज्ञयनी जाए । वह मेरे आदेश का अवश्य पालन करेगा । अब तुम जा सकते हो ।'' राजा ने कहा । सुशेम उठ खड़ा हुआ । इस बात पर वह भडक उठा कि राजा की दृष्टि में वह युवराज नहीं बल्कि ज्येष्ठ पुत्र मात्र है । तेज़ी से वह बाहर चला गया ।

* * *

''महाशय, मुझपर दया करके, केवल एक बार युवराज सुशेम से मिलने का मौक़ा दीजिये । इस स्थिति में वे ही मुझे बचा सकेंगे । मैंने कोई पाप नहीं किया । मैंने वही किया, जो उन्होंने कहा ।'' क़ैदी दलनायक गिड़गिड़ाने लगा, पाँव पडने लगा । दलनायक के साथ-साथ शेष सौ क़ैदी भी वध्य-स्थल पर ले आये गये ।

नगरपालक उसका दुखड़ा सुनते-सुनते तंग आ गया । उसने कहा ''उस युवराज ने ही तुम्हें मृत्यु-दंड दिया । तुम जीवन के आख़िरी क्षण गिन रहे हो । ऐसे समय पर तुमझे झूठ कहने की मुझे कोई ज़रूरत नहीं ।''

''क्या कहा? युवराज सुशेम ने मुझे मत्यु-दंड दिया?'' कहता हुआ दलनायक ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा ।

''उनका कहना है कि तुम्ही ने इस षड्यंत्र में उन्हें भागीदार बनाया ।'' नगरपालक ने कहा । ''हे भगवान, यह कैसा अन्याय है । सुशेम का सर्वनाश होगा । उसपर भी वही बीतेगा, जो मुझपर बीत रहा है ।'' वध्य स्थल में खड़े विलाप करते हुए दलनायक के गले पर तलवार गिरी ।

- सशेष

बड़प्पन

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। यथावत् मौन श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "राजन्, यह आधी रात का समय है। तिसपर यह श्मशान है, जहाँ भूत-प्रेत रहते हैं। हर बार अपने लक्ष्य को साधने का तीव्र प्रयत्न कर रहे हो, परंतु तुम्हारा हर प्रयत्न असफल हो रहा है। इस असफलता से तुम निराश नहीं हो रहे हो। द्विगुणित उत्साह से अपने लक्ष्य को साधने के लिए फिर से तैयार हो रहे हो। तुम्हारा अकुंठित आग्रह अभिनंदनीय है। किन्तु जब मनुष्य में ज्ञान-अज्ञान को, सत्य-असत्य को परखने की शक्ति लुप्त हो जाती है, जब वह साध्य-असाध्य के अवगाहन में असफल होता है तब आग्रह हठ में, जिद में परिणत होने की संभावना है। श्रम व सहनशक्ति का जड़ता के लक्षणों में

बैताल कथा

परिणत होने का खतरा है। उदाहरणस्वरूप मैं गोपाल की कहानी तुम्हें सुनाऊँगा। उसकी आशा थी कि खूब कमाऊँ और सभी से अच्छा आदमी कहलाऊँ। किन्तु वह न ही विचक्षण था, न ही तार्किक, न ही व्यावहारिक। इसलिए हाथ आये सदवकाशों को उसने खो दिया। अपनी थकावट दूर करते हुए मुझसे उसकी कहानी सुनो।'' बेताल फिर यों सुनाने लगा।

सबका कहना था कि गोपाल अच्छा आदमी है। मधुरवाडी गाँव का हर प्राणी उसे चाहता था। पर गोपाल की अदम्य इच्छा थी कि मैं सबों से और अच्छा आदमी कहलाऊँ और खूब पैसे कमाऊँ। इस विषय में अधिक जानकारी पाने के लिए वह पहले-पहल गाँव में प्रसिद्ध पंडित रामशर्मा के यहाँ गया।

रामशर्मा ने गोपाल के ज्ञान की परीक्षा ली। सप्ताह भर उसने उसे पाठ सिखाये और उससे याद करवाये। फिर उसने गोपाल से कहा ''पुत्र, तुममें पंडित होने के लक्षण नहीं हैं। पर तुम्हारे गले में मिठास है। त्रिपुरानगरी में रागी नामक सुप्रसिद्ध संगीत विद्वान हैं। उनके पास जाओ और संगीत सीखो।''

गोपाल त्रिपुरानगरी गया और रागी से मिला। उसने सप्ताह भर संगीत सिखाने के बाद गोपाल से कहा ''शिष्य, तुम्हारा गला सुरीला है। मुझे यह देखकर आश्चर्य हो रहा है कि उसमें से केवल मीठे शब्द ही निकल रहे हैं, सुरीले गीत निकल नहीं रहे हैं। तुम संगीत-विद्या पाने के योग्य नहीं हो। पर तुम्हारी ये लंबी-लंबी कोमल उँगलियाँ चित्रलेखन में अवश्य ही सफल होंगीं। विजयपुर में सुरेख नामक बड़ा चित्रकार है। तुम उसके पास जाओ और उस विद्या में पारंगत होने का प्रयत्न करो।''

सुरेख ने एक हफ़्ते तक गोपाल को चित्रलेखन सिखाने के बाद उससे कहा ''मित्र, चित्रकार में कल्पना-शक्ति का होना आवश्यक है। जिस दृश्य को वह देखता है, उसे सविवरण स्मरण में रखना ज़रूरी है। तभी चित्रकार अच्छे से अच्छे चित्रों को खींच सकता है। तुम्हारी कल्पना-शक्ति कुछ ख़ास नहीं है। कुछ दिनों तक तुम्हारी कल्पना-शक्ति को बढ़ाने और सँवारने के ठोस प्रयत्न होने चाहिये। इसके लिए आवश्यक है - पांडित्य। मधुरवाडी में रामशर्मा नामक महापंडित हैं। कुछ समय तक उनकी सेवा में लगे रहो।''

गोपाल यह कहने से सकुचा रहा था कि वह मधुरवाडी से आ रहा है और रामशर्मा ने उससे साफ़ कह दिया कि तुम पंडित नहीं हो सकते। सुरेख को अपनी कृतज्ञता जताकर वह वहाँ से निकल पड़ा। उसे लगा कि इस जन्म में मैं बड़ा आदमी नहीं बन सकता। उसे निराशा ने घेर लिया।

जब वह अपने गाँव की सरहद पर पहुँचा तो उसने सुना कि कोई चिल्ला रहा है "मेरी रक्षा कीजिये, मेरी रक्षा कीजिये।" वह वहाँ पहुँचा तो उसे मालूम हुआ कि सड़क के बग़ल के गड्ढे से यह आवाज़ आ रही है। उसने झाँककर देखा। वह गहरा गड्ढा था। उसमें एक आदमी था। उसने हाथ बढ़ाया पर वह आदमी पकड़ न पाया।

"मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। घबराना मत। देखता हूँ कि पास ही क्या पेड़ की कोई टहनी अथवा रस्सी मिलेगी।" गोपाल ने उसे धीरज बंधाते हुए कहा।

"तुम्हारा यह आश्वासन मात्र मेरे लिए बहुत कुछ है। यह मेरे लिए काफ़ी है" कहता हुआ वह आदमी ऊपर आ गया। फिर वह गड्ढा आप ही आप मिट्टी से भर गया।

"लगता है, तुम्हारे पास महिमाएँ हैं। फिर भी तुम अपनी रक्षा के लिए क्यों चिल्लाते रहे?" गोपाल ने आश्चर्य-भरे स्वर में पूछा।

वह आदमी हँसता हुआ बोला "मैं एक सन्यासी हूँ। मेरे पास अद्भुत शक्तियाँ हैं। हर दिन एक अच्छे आदमी की इच्छा पूरी करता हूँ। इसलिए ऐसे एक गड्ढे की सृष्टि करता हूँ और वहाँ से चिल्लाता रहता हूँ। जो

अच्छा और भाग्यवान है, मेरे पास आता है। आज तुम भाग्यवान निकले। पूछो, तुम्हें क्या चाहिये?"

गोपाल ने लंबी साँस भरते हुए कहा "बड़ा आदमी और धनवान बनने की मेरी इच्छा है। अपनी इस इच्छा की पूर्ति के लिए हर प्रकार का प्रयत्न किया।" फिर उसने सन्यासी को अपनी कहानी बतायी।

सन्यासी ने गोपाल के सिर पर हाथ रखा और कहा "इस क्षण से किसी भी पंडित को हराने की शक्ति तुम्हें प्राप्त होगी। संगीत और चित्रलेखन में भी तुम्हारी बराबरी का कोई नहीं होगा। तुम्हें मेरा यह आशीर्वाद है।" गोपाल ने सन्यासी को साष्टांग नमस्कार किया और उठकर खड़ा हो गया। तब सन्यासी ने उससे कहा "तुम अपने बड़प्पन के आधार

पर ही धन कमा सकते हो। यह बात अच्छी तरह से याद रखो।''

पहले गोपाल रामशर्मा से मिला। उसने उससे कहा ''महोदय, आपने कहा था कि मैं पंडित नहीं बन नहीं सकता। आप जानते ही होंगे कि पूर्व विष्णुशर्मा नामक पंडित ने निकम्मे और मूर्ख राजकुमारों को पंचतंत्र कथाओं द्वारा विवेकी बनाया। कोई ऐसी विद्या नहीं है, जो धुन का पक्का शिष्य सीख नहीं पाता। मुझे लगता है कि कमी मुझमें नहीं, आपमें है। मैं कुछ प्रश्न आपसे पूछूँगा। उनके उत्तर दीजिये।'' कहकर उसने रामशर्मा से कुछ प्रश्न पूछे।

रामशर्मा एक भी प्रश्न का उत्तर दे नहीं पाया। वह क्रोधित होता हुआ बोला ''तुम्हीं इन प्रश्नों के उत्तर दो।'' गोपाल ने सबके सही उत्तर दिये तो चकित होकर शर्मा बोला ''तुम्हारा पांडित्य असाधारण है। इतनी ज्ञान-प्राप्ति इस जन्म में मेरे लिए संभव नहीं।'' गोपाल वहाँ से त्रिपुरानगर गया और संगीतज्ञ रागी से मिला। उसने उससे कहा कि आप एक गीत आलापिये। मैं बताऊँगा कि उसमें क्या-क्या त्रुटियाँ हैं।

रागी ने सुंदर गीत गाया। गोपाल ने तुरंत कहा ''अशिक्षितों को आपका यह गीत अच्छा ही लगेगा। किन्तु आप जैसे विद्वानों को इस पद्धति में गाना नहीं चाहिये।'' कहकर उसी गीत को थोड़ा-सा सँवाकर उसने गाया।

रागी ने मुग्ध होकर हाथ जोड़ते हुए कहा ''तुम महान हो। जन्म भर मैं साधना करूँ, तब भी तो ऐसा गा नहीं सकूँगा। तुम्हारे बारे में पहले जो भी मैंने कहा, भूल जाओ और मुझे माफ़ करो।''

फिर गोपाल विजयपुर के सुरेख से मिला और उसके चित्रों में आवश्यक सुधार किये। तब अपने ही चित्रों की अद्‌भुत छटा को देखते हुए चकित सुरेख ने कहा ''पुत्र, तुम दैवांश हो। कोई भी भूमि पर इस प्रकार के चित्रों का अंकन नहीं कर सकता।''

तब जाकर गोपाल ने दृढ़ीकरण किया कि मैं अब बहुत बड़ा आदमी हूँ। इस बड़प्पन का उपयोग करके उसने धन कमाने की ठानी। विजयपुर में विमलानंद नामक धनवान है। वह पंडितों का बड़ा आदर-सत्कार करता है। गोपाल उससे मिला और अपने पांडित्य का प्रदर्शन किया।

विमलानंद ने गोपाल के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करने के बाद कहा ''आर्य,

आप जैसे पंडित के दर्शन-भाग्य से मेरा जन्म सार्थक हो गया। मैं आपको ऐसी भेंट देने जा रहा हूँ, जिसे अब तक मैंने किसी को नहीं दी।'' कहते हुए उसने उसे एक तालपत्र दिया।

उसने कहा कि वेदव्यास के सुनाने पर विघ्नेश्वर से स्वयं लिपिबद्ध किये गये महाभारत ग्रंथ का यह एक तालपत्र है। पूर्व जन्म सुकृतों के कारण विमलानंद के पूर्वजों में से एक को यह तालपत्र उपलब्ध हुआ है। पीढ़ियों से उसके पूर्वज इस तालपत्र की रक्षा करते आ रहे हैं।

उस तालपत्र को पाकर गोपाल निराश हुआ। किन्तु वह विमलानंद से पूछ नहीं पाया कि मुझे धन चाहिये। जब वह वहाँ से निकल रहा था, तब विमलानंद ने उससे कहा ''आर्य, पड़ोस के गाँव में मेरे बड़े भाई भ्रमरानंद रहते हैं। संगीत उनका प्राण है। आप उस विद्या में भी पारंगत हैं, अतः जिस प्रकार आपने अपने पांडित्य से मुझे संतुष्ट किया, उसी प्रकार उन्हें भी संतुष्ट कीजियेगा।'' उसने विनती की।

गोपाल, भ्रमरानंद से मिला और अपने संगीत-ज्ञान का प्रदर्शन किया। बहुत ही आनंदित होते हुए उसने कहा ''मैं नहीं समझता कि आप जैसा महोन्नत संगीतज्ञ, गायक इस भूमि पर उपस्थित है। आपको जो भी भेंट दी जाए, वह आपकी अमूल्य प्रतिभा के सम्मुख तुच्छ है। अब मैं आपको ऐसी भेंट दूँगा, जिसे मैंने आज तक किसी को नहीं दी।'' कहकर उसने गोपाल को काँसे की बनी छोटी-सी डिबिया दी।

पीढ़ियों से काँसे की बनी इस डिबिया को वे बहुत महत्वपूर्ण वस्तु मानते आ रहे हैं। इस डिबिया के ढक्कन को खोलकर कान के पास रखा जाए तो उसमें से नादब्रह्म त्यागराज का कंठ-स्वर सुनायी पड़ता है। मन में किसी राग को सुनने की इच्छा हो तो उसके स्मरण मात्र से उन्हीं के कंठस्वर में वह राग सुनायी देने लगता है।

गोपाल पूछ नहीं पाया कि मुझे डिबिया नहीं, धन चाहिये। अपने दुर्भाग्य पर अपने आपको कोसते हुए उससे बिदा लेकर वहाँ से निकल पड़ा। तब भ्रमरानंद ने गोपाल से कहा ''महाशय, मेरे अग्रज चित्रानंद पड़ोस के गाँव में रहते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि आप अपने चित्रलेखन से उन्हें मुग्ध कर सकते हैं। कला में प्राण फूँकने की शक्ति रखते हैं वे।''

चित्रानंद, गोपाल की चित्रकला से बहुत ही संतुष्ट हुआ। उसने अजंता के चित्रकार से चित्रित एक चित्र उसे भेंट में दिया। इतने वर्षों के बाद भी उस चित्र के रंगों में कोई फीकापन नहीं आया। वह चित्र वर्णनातीत अद्भुत चित्र था। असंतृप्त गोपाल उससे भी धन माँग नहीं पाया। जब वह निकलने लगा तब चित्रानंद ने उससे कहा "महोदय, आपको अपार धन देकर आपका सत्कार करने की शक्ति केवल इस देश के राजा को है। मेरी चाह है कि आप राजा से मिलें और उनका सत्कार स्वीकार करें। मुझे ज्ञात है कि आप जैसे कलाकर धन के मोह में नहीं फँसते। परंतु राजा का सत्कार कलाकारों के गौरव का चिह्न है।"

उसकी बातों से गोपाल को धन कमाने का उपाय मालूम हो गया। वह तुरंत राजधानी गया और वहाँ पहुँचने के बाद एक सराय में रहने लगा। उस सराय में उसने रामशर्मा, रागी और सुरेख को देखा।

उसे वहाँ मालूम हुआ कि उस देश का राजा देश के कलाकारों में एक स्पर्धा का आयोजन करनेवाला है। उत्तम कलाकारों का स्वागत-सत्कार बड़े पैमाने पर करनेवाला है। वे तीनों भी इन्हीं स्पर्धाओं में भाग लेने वहाँ आये। गोपाल को देखते ही वे ठंडे पड़ गये। उन्होंने कहा "इस संसार में हम किसी का भी मुक़ाबला कर सकते हैं, परंतु आप इस स्पर्धा में भाग लेंगे तो हम पहले से ही जानते हैं कि फल क्या होगा। अब हमारा लौटकर जाना ही श्रेयस्कर है।"

वे तीनों अपने-अपने प्रयत्नों के द्वारा उन-उन विद्याओं में निष्णात बने। पर गोपाल प्रवीण बना, अपने भाग्य के बल पर। इस विषय पर गोपाल ने खूब सोचा-विचारा और एक निर्णय पर पहुँचकर उसने उन तीनों से कहा "आप तीनों मेरे लिए गुरु समान हैं। आप ही के कारण मैं इस उन्नत स्थिति तक पहुँच पाया हूँ। मैं केवल स्पर्धाएँ देखूँगा, उनमें भाग नहीं लूँगा। परंतु हाँ, इन स्पर्धाओं में आप पराजित होंगे तो उनसे मैं भिड़ूँगा, जो आपको हराएँगे।"

उसकी बातों से रामशर्मा, रागी, सुरेख बहुत ही संतुष्ट हुए। गोपाल को स्पर्धाओं में भाग लेने की ज़रूरत नहीं पड़ी, क्योंकि वे तीनों अपनी-अपनी विद्याओं में विजेता घोषित हुए। उन तीनों ने शेष सभी को हराया। हर एक को लाख अशर्फियाँ पुरस्कार

के रूप में मिलीं।

लौटने के पहले तीनों ने गोपाल को थोड़ा धन देना चाहा। किन्तु गोपाल ने धन को लेने से इनकार करते हुए कहा "जिसके भाग्य में जो लिखा है, वही प्राप्त होगा। दान के रूप में यह धन आपसे लेने की इच्छा नहीं है।"

"यह धन आप दान के रूप में न लीजियेगा, प्रतिफल के रूप में हमारी कोई सहायता कीजियेगा" तीनों ने कहा।

ऐसा कहने में उन तीनों का उद्देश्य था कि गोपाल से ऐसे विषय वे जानना चाहते थे, जिनकी जानकारी उन्हें नहीं है। वे अपनी-अपनी विद्याओं की बारीकियों से अपना ज्ञान और बढ़ाना चाहते थे।

किंतु गोपाल ने उनकी बातों का अर्थ कुछ और ही समझा और कहा "मेरे पास जो हैं, वे हैं, वेदव्यास का तालपत्र, त्यागराज की काँसे की डिबिया और अजंता का चित्र। इनके अलावा मेरे पास है ही क्या ?"

गोपाल ने जैसे ही उन अपूर्व वस्तुओं के नाम बताये, वे तीनों आश्चर्य में डूब गये और कहने लगे "वे तो अमूल्य वस्तुएँ हैं। अपार धन देकर भी वे खरीदी नहीं जा सकतीं। हम तीनों तीन लाख अशर्फ़ियां देंगे। उन्हें हमें दे दीजिये।" वे गिड़गिड़ाने लगे।

गोपाल असमंजस स्थिति में पड़ गया। उसकी समझ में नहीं आया कि अब क्या किया जाए। उसने कहा "तालाब के किनारे बरगद का जो पेड़ है, उसकी छाया में चलें। वहाँ मैं अपना निर्णय सुनाऊँगा।" चारों उस पेड़ की तरफ़ बढ़े। गोपाल मन ही मन सोचने लगा कि क्या किया जाए। जैसे ही जब पेड़

के नीचे पहुँचे, उसने कहा, "सन्यासी के कथन का गूढ़ार्थ अब मेरी समझ में आ रहा है। आप यह न पूछिये कि वह सन्यासी कौन था ? आप सच्चे कलाकार हैं। अच्छा इसी में है कि ये अपूर्व वस्तुएँ आप ही के पास सुरक्षित रहें।" उसने तालपत्र, डिबिया व चित्र उनके सुपुर्द किये और तीन लाख अशर्फ़ियाँ उनसे ले लीं। फिर वह अपने गाँव की ओर निकल पड़ा।

बेताल ने विक्रमार्क को यह कहानी सुनाने के बाद कहा, "राजन्, गोपाल की तीव्र इच्छा थी कि खूब धन कमाऊँ और सबसे अच्छा आदमी कहलाऊँ। इसके लिए उसने बहुतों का आश्रय लिया और अंत में सन्यासी के आशीर्वाद के बल पर बड़े से बड़े पंडितों को हराने की शक्ति पायी। परंतु लगता है

कि उसने उसका उपयोग सही रूप में सही समय पर नहीं किया। राजा ने कलाकारों के बीच जिस स्पर्धा की आयोजना की थी, उसमें वह भाग ले सकता था और सारे पंडितों को सुगमता से हरा सकता था। किन्तु यह अवकाश उसने अपने हाथ से लुढ़क जाने दिया। अगर वह इस सदवकाश का लाभ उठाता तो उसे अनगिनत पुरस्कार मिलते। धनवान बनता और अपना सपना पूरा कर पाता। आख़िर उसने तो उसे प्राप्त भेंटें भी पंडितों को दे दीं और उनसे तीन लाख अशर्फ़ियाँ पाकर तृप्त हो गया। इन सबके मूल में उसके विवेक व तार्किक दृष्टि का लोप ही है। वह विचक्षण नहीं है। इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारा सिर टुकड़ों में फट जायेगा।''

विक्रमार्क ने कहा ''सन्यासी ने गोपाल को आशीर्वाद दिया और कहा कि बड़े से बड़े पंडितों को भी हराने की शक्ति व सामर्थ्य तुम्हें दे रहा हूँ। परंतु सन्यासी ने साथ-साथ उसे यह कहते हुए सावधान भी किया कि धन कमाने के विषय में कुछ नियमों का तुम्हें पालन करना होगा। उसने उससे बताया कि तुम अपने पांडित्य के बूते पर नहीं बल्कि व्यक्तिगत बड़प्पन, अच्छाई व सद्व्यवहार के बल पर ही धन कमा सकोगे। वह चाहता तो राजा द्वारा आयोजित स्पर्धाओं में भाग ले सकता था और रामशर्मा, रागी व सुरेख को पराजित कर सकता था, पर उसने ऐसा नहीं किया। ऐसा न करके उसने अपना बड़प्पन साबित किया। उसने जान भी लिया कि उसके पास जो वस्तुएँ हैं, वे वस्तुएँ सच्चे कलाकारों के लिए ही अपूर्व वस्तुएँ हैं। उनकी दृष्टि में वे वस्तुएँ धन से भी महत्तर हैं। उसका कृत्रिम प्रदत्त पांडित्य पंडितों को पराजित करने की शक्ति रखता है, पर वह उसे कलाकार नहीं बना सकता, उसे कला-दृष्टि प्रदान नहीं कर सकता। अतः न्याय इसी में है कि वे अपूर्व वस्तुएँ सच्चे कलाकारों के पास ही हों। इस प्रकार आखिरी क्षण उसका विवेक जगा और उनके दिये तीन लाख अशर्फ़ियों से संतृप्त होकर चला गया।''

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित गायब हो गया और पुनः पेड़ पर जा बैठा।

आधार - रागवंशी की रचना

आंध्र के तट पर

वर्णन : मीरा नायर ◆ चित्र : के. एस. गोपकुमार

मछलीपट्टणम् के उत्तर में *गोदावरी* का डेल्टा है. गोदावरी दक्षिण की सबसे लंबी नदी है और अक्सर 'दक्षिण गंगा' के नाम से याद की जाती है. भूतपूर्व फ्रांसीसी उपनिवेश *यानाम* इस डेल्टा के उत्तरपूर्वी छोर पर है.

छोटा-सा शहर है यानाम. उसका और उसके साथ के प्रशासनिक इलाके का क्षेत्रफल केवल 34 वर्ग मील है. लंबे अरसे तक वह फ्रांसीसी उपनिवेश था. अब वह संघक्षेत्र पांडिचेरी का हिस्सा है.

जरा और आगे उत्तर में *सर्पपुरम्* गांव है – सांपों की नगरी ! यहां का भावनारायणस्वामी का मंदिर प्रसिद्ध है. उसके साथ यह कथा जुड़ी हुई है :

सर्पराज अनंत या शेषनाग की माता को एक दिन सांपों पर इतना गुस्सा आया कि वह उन्हें भयंकर शाप दे बैठी. परिणाम यह हुआ कि एक यज्ञ में सब सांप जल कर राख हो गये. शेषनाग उस समय तीर्थयात्रा पर थे. जब वे लौटे तो सारा मामला जान कर बहुत दुःखी हुए. उन्होंने भगवान विष्णु की स्तुति करते हुए उग्र तप किया, जिससे सांप फिर से जी जाएं. विष्णु प्रसन्न हो कर उनके सामने प्रकट हुए. वे ठीक उसी रूप में थे जैसी कि शेषनाग ने अपने मन में उनकी कल्पना की थी. बाद में शेषनाग ने वहां पर मंदिर बनवाया और भगवान विष्णु की ठीक वैसी ही मूर्ति बनवायी, जिस रूप में उन्होंने उनके दर्शन किये थे. वह मूर्ति *भावनारायणस्वामी* कहलायी, क्योंकि वह कल्पना में देखे गये रूप के

काकिनाडा का मछली बंदर

अनुरूप थी.

उत्तर में कुछ और किलोमीटर चल कर हम पहुंचते हैं *काकिनाडा*, जिसे अंग्रेज बहुत समय तक *कोकोनाडा* कहते रहे. यह एक छोटा बंदरगाह है, जहां से कपास, मूंगफली, चीनी और तमाखू का निर्यात होता है. यहां सन 1923 में कांग्रेस का महत्वपूर्ण अधिवेशन खिलाफत आंदोलन के नेता मौलाना मुहम्मद अली की अध्यक्षता में हुआ था.

द्राक्षाराम मंदिर

तटवर्ती शहर *द्राक्षाराम* काकिनाडा से 17 कि. मी. उत्तर में है. स्थानीय विश्वास के अनुसार, इसका मूल नाम *दक्षाराम* (दक्ष+आराम) था, जिसका अर्थ है – दक्ष का बगीचा. मान्यता है कि दक्ष प्रजापति ने यहां पर यज्ञ किया था.

पुराणों के अनुसार, दक्ष प्रजापति की बेटी दाक्षायणी या सती ने अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध शिव से विवाह कर लिया. एक बार दक्ष ने बहुत बड़ा यज्ञ किया और जानबूझकर उसमें अपनी बेटी और दामाद को निमंत्रित नहीं किया. दाक्षायणी यज्ञ में उपस्थित होना चाहती थी और वह हठ करके अकेली ही गयी. वहां पिता ने न केवल उसकी उपेक्षा की, बल्कि शिवजी के बारे में अपमानजनक शब्द भी कहे. दाक्षायणी अपने पति का यह अपमान सहन न कर सकी और यज्ञकुंड में कूद पड़ी तथा जल कर मर गयी. यह समाचार पा कर शिव बहुत ही क्रुद्ध हुए और क्रोध की गरमी से उनके शरीर से पसीना बह चला. उस पसीने से शिव के गण वीरभद्र का जन्म हुआ, जिसने अपने स्वामी के अपमान का बदला लेते हुए दक्ष का वध कर डाला.

ऐसा माना जाता है कि द्राक्षाराम के मंदिर से ही तेलुगु कवि श्रीनाथ को अपना काव्य *भीमखंडम्* लिखने की प्रेरणा

राजमंड्री का पुल जिस पर रेलमार्ग है.

मिली. तेलुगु में मौलिक कविता की रचना श्रीनाथ से ही आरंभ हुई, ऐसी मान्यता है.

यह बड़ी दिलचस्प बात है कि मंदिर के अहाते में ही एक मुसलमान संत सैयद शाह भाजी औलिया का मजार है और एक मस्जिद भी.

राजमंड्री या *राजमहेन्द्रवरम्* काकिनाडा के पश्चिम में डेल्टा क्षेत्र के आरंभ में गोदावरी के तट पर स्थित है. यहां के कालीन और चंदन की बनी चीजें मशहूर हैं. यहां गोदावरी पर 56 स्पान वाला पुल है. वह भारत का दूसरे नंबर का सबसे लंबा पुल है. राजमंड्री का संबंध महाकवि नन्नय से भी है, जिन्होंने तेलुगु का पहला महाकाव्य *आंध्र महाभारतमु* लिखा.

तट के साथ-साथ बनी सड़क से चल कर अब हम पहुंचते हैं *विशाखपट्णम्* जो पश्चिमी यूरोप के रॉटरडैम और पूर्वी एशिया के टोक्यो के बीच सबसे बड़ा और सबसे गहरा बंदरगाह है. यहां समुद्रतट पर वैशाख देवता का मंदिर है, जो वीरता के देवता माने जाते हैं. विशाखपट्णम् नाम वैशाख देवता के नाम पर पड़ा, ऐसी स्थानीय मान्यता है.

विशाखपट्णम् की जहाज-निर्माण गोदी

विशाखपट्णम् पहले छोटा-सा मच्छीमार गांव था. अंग्रेजों ने उसका विकास बंदरगाह के रूप में किया. आज यह बड़ा व्यस्त औद्योगिक शहर है. देश का सबसे बड़ा जहाज-निर्माण कारखाना हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड यहीं पर है. उसकी स्थापना 1952 में हुई.

शहर का सबसे प्रसिद्ध स्थल है – डॉल्फ़िन्स नोज़. यह एक चट्टान है – 358 मी. ऊंची और समुद्र में पच्चर की तरह घुसी हुई. इसका आकार डॉल्फिन (सूंस) की थूथन जैसी है. इस विशाल चट्टान पर प्रकाशस्तंभ बना हुआ है, जिसकी रोशनी समुद्र में 65 कि.मी. दूर तक दिखाई देती है. यह भारत का सबसे शक्तिशाली प्रकाशस्तंभ है.

विशाखपट्णम् का जुड़वां शहर समझा जानेवाला *वाल्टेयर* उससे सिर्फ तीन कि.मी. उत्तर में है. अपनी बढ़िया जलवायु के कारण वह स्वास्थ्यवर्धक स्थान माना जाता है. आंध्र विश्वविद्यालय यहीं पर है. विशाखपट्णम् सुनहरी रेत वाले अपने सुंदर बालूतटों के लिए प्रसिद्ध है. उनमें से मुख्य हैं – रामकृष्ण मिशन बीच, ऋषिकोंडा बीच और लॉसन्स बे.

सिंहाचलम् की पहाड़ी विशाखपट्णम् से 16 कि.मी. पश्चिम में है और प्रसिद्ध तीर्थस्थान है. उसकी

डाल्फिन्स नोज़

चोटी पर विष्णु के चौथे अवतार नरसिंह भगवान का मंदिर है, जिसे 11 वीं सदी में बनाया गया था.

पुराणों में यह कथा है कि दैत्यों का राजा हिरण्यकशिपु अपने बेटे प्रह्लाद से इस बात पर नाराज था कि वह विष्णु का भक्त है. उसने प्रह्लाद की विष्णुभक्ति छुड़ाने की बड़ी कोशिश की, किंतु सफल न हो सका. खीज कर उसने प्रह्लाद को समुद्र में फेंक दिया और ऊपर से सिंहाचल की पहाड़ी रख दी, जिससे वह दब कर मर जाए. इससे विष्णु को बड़ा क्रोध आया. नरसिंह (आधे मनुष्य और आधे सिंह) का वेश धर कर वे आये और सिंहाचल के एक सिरे पर खड़े हो गये. उनके वजन से पहाड़ी एक ओर से दबी और उसका दूसरा सिरा ऊपर उठ गया, जिससे प्रह्लाद बाहर निकल गये. उसके बाद नरसिंह ने हिरण्यकशिपु का पीछा करके उसका संहार किया. किंतु इसके बाद भी जब उनका क्रोध शांत न हुआ तो शिवजी ने शरभ पक्षी का रूप धारण करके उन्हें शांत किया.

देवता के क्रोध को पूरी तरह शांत करने के लिए सिंहाचलम् की नरसिंह की मूर्ति पर चंदन का गाढ़ा लेप चढ़ाया जाता है. लेप की परत साल में केवल एक बार अप्रैल-मई में चंदनयात्रा उत्सव में हटायी जाती है. उस समय देवदर्शन करने सारे देश से भक्त यात्री सिंहाचलम् आते हैं.

लॉसन्स बे

सपना सच हुआ

किरीट के माँ-बाप उसके बचपन में ही गुज़र गये। उसके दादा ने अनेकों कष्ट झेलकर उसे पाला-पोसा और बड़ा किया। वह अठारह साल की उम्र का हो गया, फिर भी दादा के लाड-प्यार की वजह से न ही जिम्मेदारियों से परिचित था, न ही घर की स्थिति से। दादा हठात् बीमार पड़ गया। वह अधिकतर खाट पर ही पड़ा रहता था। दवा के लिए पैसे भी नहीं थे। तब जाकर उसे घर की हालत का पता चला।

किरीट को अब पैसों की सख़्त ज़रूरत महसूस हुई। घर को बेचने के अलावा और कोई चारा नहीं था। उसके दादा ने इसपर आपत्ति उठायी और कहा "अब तो मैं बचनेवाला नहीं हूँ। ज्यादा दिन ज़िन्दा नहीं रहूँगा। मेरे लिए घर बेच डालोगे तो तुम मुसीबतों में फँस जाओगे।"

"तुम्हारे बिना मैं कैसे ज़िन्दा रह सकता हूँ। धन कमाने के उपाय हो सकते हैं किन्तु मरे आदमी को ज़िन्दा कैसे कर सकते हैं? तुम्हें मेरे लिए ही सही, ज़िन्दा रहना होगा" किरीट ने आँसू बहाते हुए कहा।

घर बेचने पर जब रक़म मिली, तब उसने शहर से डाक्टर को बुलवाया। फिर भी एक महीने के अंदर ही दादा चल बसा। चिकित्सा के बाद बचे-खुचे पैसों से उसने अपने दादा का क्रिया-कर्म बड़े पैमाने पर किया।

हफ़्ता बीत गया। अब किरीट के सामने गंभीर समस्या उठ खड़ी हुई। उसकी समझ में नहीं आया कि जीविका कैसे चलाऊँ। वह एक दिन सबेरे गाँव से बाहर आया और चट्टान पर बैठकर सोचने लगा। उसने जेब से पैसे निकाले और गिनने लगा कि कितनी और रक़म बच गयी। ठीक चाँदी के साठ सिक्के थे। वह भविष्य को लेकर चिंतित था। तब एक वनजन उसके पास

धीरेंद्र

आया और आँखों में आँख डालकर उसे ग़ौर से देखने लगा। कहने लगा "चेहरे पर राज-कला झलक रही है। किन्तु तुम्हारी वेष-भूषा देखते हुए लगता है कि ग़रीब हो। परेशान न होना। तुम्हारा भविष्य उज्वल है।" कहते हुए उसने सिक्कों में से एक सिक्का लिया और चलता बना।

दिन भर किरीट वनजन की बातों का ही मनन करता रहा। सबेरे-सबेरे सपने में उसने देखा कि रत्न-खचित मुकुट उसके सिर पर सजा हुआ है। वह बड़बड़ाते हुए जाग उठा। मुर्गे की बाँग सुनायी दे रही थी। उसका दादा कहा करता था कि सुबह के सपने सच निकलते है। दादा की ये बातें उसे याद आयीं। पर वह इसी गाँव में रहा तो भला राजा कैसे बन सकता है? उसने गाँव छोड़ने का निर्णय लिया।

वह तुरंत अपना जन्म-स्थल छोड़कर राजधानी जाने के लिए निकल पड़ा। तीन दिन और तीन रातें वह पैदल चला और चौथे दिन दुपहर को राजधानी पहुँचा। अब उसके पास चाँदी के तीन सिक्के ही बाक़ी थे। भूखा था, इसलिए पास ही के एक भोजनालय में गया।

उस समय क़तार में बैठे दस मुसाफ़िरों को एक बूढ़ी दादी पत्तों में खाना परोस रही थीं। किरीट से उसने एक सिक्का लिया और उसे एक कोने में बिठाकर केले का पत्ता बिछाया और उसमें खाना परोसा। वहाँ जो थे, उनमें से दो आदमी अक़्सर वहाँ आने-जानेवालों में से थे। एक आदमी ने बूढ़ी से पूछा "दादी, तुम्हारे चेहरे पर चिंता की ये लकीरें कैसी? पिछली बार जब आया था तब तुमने कहा कि तुम्हारे राजा ज़हरबाद से पीडित हैं। क्या वे चंगे नहीं हुए?"

दादी ने लंबी साँस खींचते हुए कहा "पड़ोसी राजा के आस्थान-वैद्य की कृपा से हमारे राजा बच गये। अब उनके सामने बेटी की शादी गंभीर समस्या बनकर खड़ी हो गयी। सुना कि युवरानी सदा एक ही प्रकार का सपना देखती रहती है। वह हर रोज़ सपने में देखती है कि जब वह मंदिर जाती रहती है तब एक विषैला साँप डसने ही वाला है कि एक युवक आकर उसे बचा लेता है। कितने ही विवाह-प्रस्तावों को उसने ठुकरा दिया। उसका हठ है कि जो उसे बचायेगा, उसी से शादी करूँगी। अचरज की बात है

कि मंदिर के मार्ग में उसने आज तक एक मामूली साँप को भी नहीं देखा।''

किरीट ध्यान से बूढ़ी की बातें सुन रहा था। उसे लगा कि उसने क़िले पर फ़तह पा ली। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। जल्दी-जल्दी खाना खा लिया और संपेरों की खोज में निकला। वह संपेरे दामू से मिला। किरीट ने उससे कहा कि मुझे एक काला साँप चाहिये, जिसके दाँत उखाड़ दिये गये हों और जो विषैला न हो।

''क्यों नहीं। है। दो सिक्के देने होंगे।'' संपेरे दामू ने कहा। किरीट की जेब में ठीक दो ही सिक्के थे। उन दोनों सिक्कों को दामू के हाथों में रखा और उसकी टोकरी में बंद साँप को लेकर पहाड़ पर चढ़ गया। एक झाड़ी के पीछे छिपकर आने-जानेवालों को गौर से देखने लगा।

थोड़ी देर बाद उसने देखा कि दो युवतियाँ उस राह पर जा रही हैं। उनमें से युवरानी नहीं है। सूर्यास्त हो गया और क्रमशः अंधेरा छाने लगा। तब उसने देखा कि उस समय जगमगाते वस्त्रों में सुसज्जित युवरानी उधर से गुज़र रही है। किरीट ने फ़ौरन साँप को युवरानी पर फेंका। साँप जैसे ही उसके कंधे पर गिरा, युवरानी चिल्ला उठी। दूसरे ही क्षण किरीट झाड़ियों से त्वरित गति से बाहर आया और आगे बढ़कर साँप को पकड़ लिया और फेंका।

युवरानी थोड़ी देर बाद होश में आयी और किरीट को देखकर कहा ''आहा, मेरा सपना सच निकला। तुम्हीं मेरे पति हो।''

किरीट ने पूछा कि आप क्या कह रही

हैं? उसने इस अंदाज़ में पूछा, मानों वह कुछ जानता ही न हो।

तब युवरानी ने उसे अपने सपने के बारे में बताया, जिसे वह हर दिन देखती रहती है। फिर अपना निर्णय सुनाती हुई बोली ''मैंने उसी से शादी करने की प्रतिज्ञा की, जो मुझे काले साँप से बचायेगा। अगर तुमने मुझसे शादी करने से इनकार कर दिया तो जन्म भर कुँवारी ही रह जाऊँगी।'' कहती हुई वह रोने लगी।

किरीट ने आनंद-भरित होकर युवरानी का हाथ पकड़ लिया। वे दोनों देवी के आलय में गये और पुजारी के दिये हारों को एक दूसरे को पहनाकर पति-पत्नी बन गये। युवरानी किरीट का हाथ पकड़कर पहाड़ से नीचे उतरने लगी। किरीट को यह घटना

सपना लगने लगा। दोनों वर-वधु भोजनालय की मालकिन बूढ़ी की झोंपड़ी में आये। तब जाकर किरीट होश में आया।

"यहाँ क्यों ले आयी? इस दादी को तुम पहले से ही जानती हो?" चकित किरीट ने युवरानी से पूछा।

युवरानी ने हँसकर कहा "बहुत पहले की बात है। गंगा मैय्या के पुष्कर उत्सव में खो गयी थी। उस समय मैं चार साल की थी। मैं ज़मीन पर बैठकर रोती जा रही थी। सब देखते रहे, लेकिन किसी ने भी मुझसे नहीं पूछा कि मैं क्यों रो रही हूँ। इस दादी ने मेरे रोने का कारण जाना और अपने साथ ले गयी। तब से यह दादी ही मेरी देखभाल कर रही है। प्रेम से पालकर मुझे इतना बड़ा किया।" "तब तुम क्या युवरानी नहीं हो?" विभ्रांत होकर उसने पूछा। "मेरा नाम युवरानी ही है। संदेह क्यों?" युवरानी ने आश्चर्य से पूछा।

"अगर तुम इस दादी की गोद ली हुई बेटी हो तो ये चमकीले वस्त्र कैसे? ऐसे वस्त्र तो राजकुमारियाँ ही पहनती हैं।" किरीट ने पूछा।

उसके इस प्रश्न-पर ठठाकर हँसती हुई युवरानी बोली "मैं इस देश की युवरानी की प्रधान परिचारिका हूँ। वे मुझे बहुत चाहती हैं। कभी-कभी उनसे माँगकर उनके पुराने वस्त्र लेती रहती हूँ।"

रसोई-घर में काम पर लगी बूढ़ी ने यह सब कुछ सुना और बहुत खुश हुई। बाहर आकर युवरानी से उसने कहा "अरी युवरानी, अब मेरे बदन में ताक़त नहीं रही, अब इस भोजनालय को दामाद के सुपुर्द कर दूँगी।"

युवरानी ने दादी से कहा "यह युवरानी शादी के लिए जितने भी रिश्ते आये थे, ठुकराती रही। तुम चिंतित थी कि आख़िर मेरी शादी होगी कि नहीं। अब तो खुश हो न?"

दादी ने युवरानी के गालों को दबोचते हुए कहा "अब से तुम युवरानी नहीं हो। शादी हो गयी न? अब से रानी हो, रानी।"

स्वतंत्र होकर जीने का आधार किरीट को अब मिल गया, इसलिए उसने भी खुश होते हुए कहा "इस शादी से मेरा सपना भी साकार हुआ। रानी का पति राजा ही होगा न?"

१. छोटे-छोटे जलचरों की हड्डियों से बनी सफ़ेद और लंबी खड़ी चट्टानें कहाँ हैं?

समुद्र में निवास करते हुए इन जंतुओं की सफ़ेद हड्डियाँ एक पर एक चढ़ जाती हैं और लाखों सालों में क्रमश: सख्त हो जाती हैं। तब जाकर ये लंबी चट्टानों में परिवर्तित होती हैं। भूमि के हिलने की वजह से वे बाहर ढकेली जाती हैं।

संसार में इन्हें कहाँ देख सकते हैं ?

२. स्तूप के आकार का धान्यागार?

हमारे देश के इस धान्यागार का दरवाज़ा अंदर की तरफ़ ही खोला जा सकता है। जब धान्यागार खचाखच भरा हुआ होता है तब दरवाज़ा खोला नहीं जा सकता। सत्रहवीं शताब्दी में जब अकाल ने यहाँ विकृत रूप धारण किया तब ईस्ट इंडिया कंपनी ने इसका निर्माण किया।

३. संसार में सबसे ऊँची मूर्ति?

दोनों हाथ फैलायी हुई है। एक हाथ में खड्ग है। बहुत ही सुन्दर व आकर्षक लगनेवाली यह मूर्ति एक स्त्री की है। इस मूर्ति की ऊँचाई ८२ मीटर हैं।
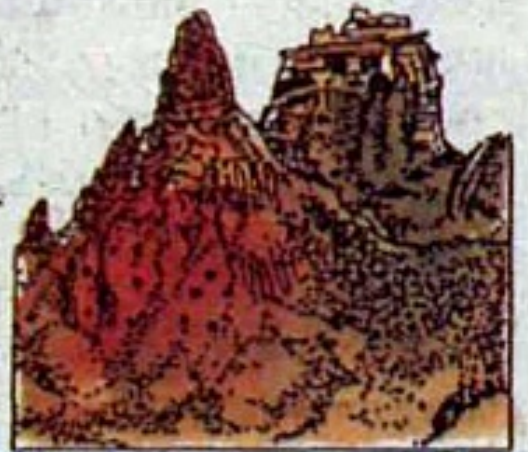
४. ज्वालामुखी के फूटने से किरीट के रूप में ढले पर्वतों में निवास करनेवाले लोग ?

लगभग दस लाख सालों के पहले एक ज्वालामुखी फूटा। इस कारण किरीट के आकार के पहाड़ देखने में मंजिलों की तरह और मंजिलों से भरे नगर की तरह दिखायी देते हैं। इन कोमल पहाड़ों को छेदकर गुफाएँ बनायी गयीं, जो निवास-योग्य घरों के रूप में इस्तेमाल की जा रही हैं। कोमल इन पहाड़ों में देवपीठ, कुर्सियाँ, मेज़ गिरिजाघर और आश्रमों की भी खुदाई हुई है।

५. सबसे बड़ा राष्ट्रीय चिड़ियाघर ?

इस चिड़ियाघर में लगभग ४०० जाति के पक्षी हैं। १५० जातियों के स्तनधारी जंतु हैं, ५० जातियों की मछलियाँ हैं, ४० तरह के मेंढक हैं, ३४ प्रकारों के साँप हैं। १९,४५५ वर्ग कि.मी. का वैशाल्य।

इस चिड़ियाघर में करीबन ७००० हाथी, १५०० सिंह, ९०० चीते तथा एक और जाति के २१ चीते हैं।

चित्र-पहेली

१. एक सुंदर कन्या के चेहरे का यह पार्श्व भाग है। इसमें एक और चेहरा भी छिपा हुआ है। क्या बता सकते हो, वह क्या है?

२. बड़ी ही तेजी से युवक साइकिल चला रहा है। किन्तु इस चित्र के चित्रांकन में चित्रकार ने गलती की। क्या पता लगा पाओगे कि वह गलती क्या थी ?

कथा - पहेली

इस कहानी में छोटी-सी गलती रह गयी है। बताना कि वह क्या है?

चक्रवर्ती की उदारता

चंद्रगुप्त का पोता अशोक एक दिन शाम को उद्यानवन में टहल रहा था। अचानक एक पत्थर उसकी पीठ पर आ गिरा। दूसरे ही क्षण अशोक के अंगरक्षकों ने उस पत्थर फेंकनेवाली को पकड़ा और उसे अशोक के पास ले आये। भय से काँपती हुई उस स्त्री ने कहा

''महाराज मुझे क्षमा करें। यह भूल अनजाने में हो गयी। सबेरे से बच्चे भूख से तड़प रहे हैं। उनकी भूख मिटाने के उद्देश्य से पेड़ पर पत्थर फेंककर अमरूद गिराना चाहती थी। निशाना चूक गया और वह पत्थर आप की पीठ पर आ गिरा।'' बड़ी ही दीनता से उसने कहा।

''फ़ौरन चाँदी की सौ अशर्फ़ियाँ इस स्त्री को दी जाएँ।'' अशोक ने मंत्री को आज्ञा दी।

''महाप्रभू, इसने आपपर पत्थर फेंका। इसके लिए इसे सज़ा मिलनी ही चाहिये। किन्तु आप तो इसे पुरस्कार देने'' कुछ और कहने जा रहा था मंत्री।

तब अशोक ने उसकी बात को काटते हुए कहा ''उसका फेंका पत्थर पेड़ को जा लगता तो वह पेड़ इस गरीब औरत को अमरूद देता। राजा को तो एक पेड़ से भी अधिक उदार होना चाहिये। है कि नहीं।'' अशोक ने मुस्कुराते हुए कहा।

उत्तर :

अशोक चक्रवर्ती के जमाने में हमारे देश में अमरूद के पेड़ नहीं थे। यूरोपियन इस पेड़ को हमारे देश में ले आये।

शौकीले सवाल

१. बारह बच्चों को एक-एक कतार में चार-चार के हिसाब से चार कतारों में खड़ा करना कैसे संभव है ?

२. जब तुम अपने बायें पाँव और बायें कंधे को दीवार से सटाकर खड़े हो जाओगे तब अगर तुमसे कहा जाए कि क्या तुम दायाँ पाँव ऊपर उठा सकते हो, तो क्या उठा पाओगे ?

३. कल्पित कुछ जंतुओं के नाम अस्त-व्यस्त हैं। उन-उन जंतुओं के नाम सही स्थल पर सूचित कर सकोगे?

४. दो लाल, तीन काली कुल मिलाकर पाँच टोपियाँ हैं। मोहन, राम, विजय ने एक-एक टोपी सिर पर रख ली। शेष दोनों टोपियाँ दिखायी नहीं दे रही हैं, छिपी हैं।

विजय और मोहन जहाँ दिखायी दे रहे हैं, वहाँ राम बैठा हुआ है। विनय सिर्फ मोहन को ही देख सकता है। मोहन को वे दोनों दिखायी नहीं दे रहे हैं। फिर भी तीनों एक-दूसरे की बात सुन सकते हैं। राम से जब पूछा गया कि तुमने किस रंग की टोपी पहन रखी है तो उसने कहा कि मैं नहीं जानता। विनय को भी मालूम नहीं कि किस रंग की टोपी उसके सिर पर है। किन्तु राम का उत्तर सुनते ही वह जान गया कि काले रंग की टोपी अपने सिर पर है। वह इस निर्णय पर कैसे आ सका?
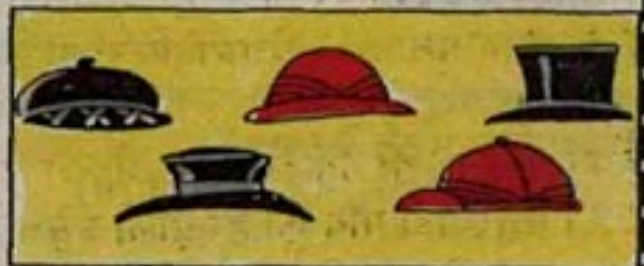
सुगम चार क्रमों में 'P' को नींद में मस्त उल्लू के रूप में बदल सकते हैं। यह कैसे मुमकिन है, यहां देखिये।
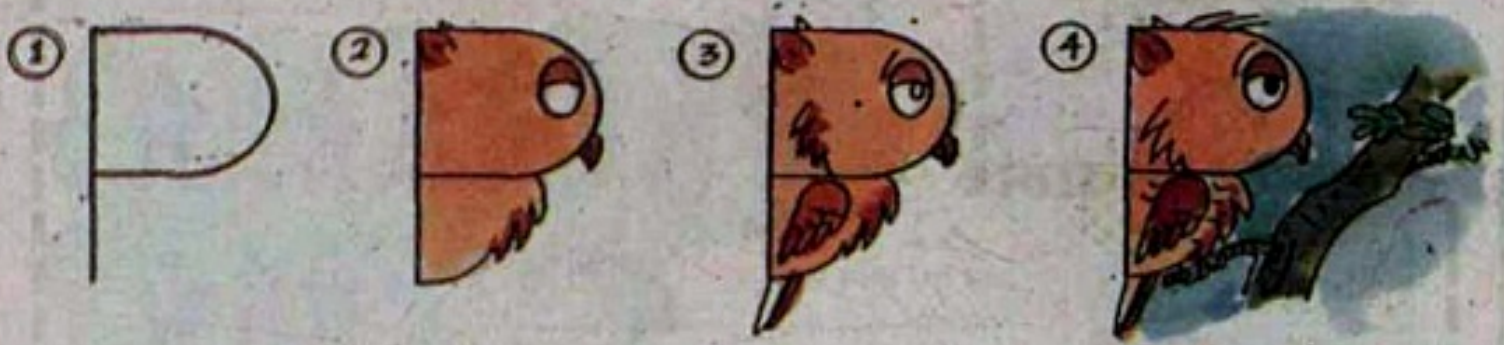
सुवर्ण रेखाएँ - १३ के उत्तर

संसार में कहाँ देख सकते हैं?

१. दक्षिण पश्चिमी फ्रान्स के लास्कास्क में
२. राजस्थान का चित्तौड्गड़
३. अफ्रीका (मौंट किलिमंजारो) उत्तरी टांजानिया
४. मियान्मार (बर्मा)
५. अमेरीका का वाषिंगटन डी.सि.

चित्र - पहेली

अफ्रीका के जंगलों में बाघ नहीं हैं।

चित्र - पहेली

१. सौदी अरेबिया २. चीन ३. ईजप्ट ४. जर्मनी ५. बोलीविया ६. जिंबाब्वे
७. स्पैन ८. मियान्मार ९. मडगास्कर

शौकीले सवाल

१. पचास पैसे, पाँच पैसे, एक सिक्का पचास पैसों का नहीं है। परंतु दूसरा सिक्का पचास पैसों का है।
२. तोता बहरा है।
३. परिवार में कुल छे सदस्य हैं।
४. ग्रीनलांड दिखायी न दे, पर वह तो था।
५. दोनों मित्रों को एक ही बार एकसाथ ले जाएँ। तो तीन टिकेट खरीदने होंगे। एक मित्र को दो बार ले जाएँ तो अपने लिए भी दो बार टिकेट खरीदने होंगे।
६. अंतिम लड़की को पेटी सहित सेब देना चाहिये।
७. झूठा। उसने ऐसा वार्तालाप सुना नहीं। झूठा यह सच नहीं बतायेगा कि वह झूठी है। सच बोलनेवाला अपने को झूठा नहीं कहेगा।
८. जिनके पाँव बड़े हों।

महाभारत

पांडवों के अरण्यवास का बारहवाँ वर्ष पूरा होने जा रहा है। इंद्र ने पांडवों का कल्याण करने के उद्देश्य से ब्राह्मण के वेष में कर्ण के पास जाने का निश्चय किया। उसने उससे उसके सहज कवच-कुंडल माँगना चाहा। यह बात कर्ण के पिता सूर्य को मालूम हुई। एक दिन प्रातःकाल सूर्य, कर्ण को सपने में दिखायी पड़ा और कहा "पुत्र कर्ण, ब्राह्मण जो भी भी माँगते हैं, दे देने की तुम्हारी आदत है। तुम जगत् प्रसिद्ध दानी हो। इस कारण इंद्र ब्राह्मण बनकर तुम्हारे पास आनेवाला है और तुमसे तुम्हारे कवच-कुंडल दान में माँगनेवाला है। तुम चाहो तो कुछ और दो, परंतु अपने कवच-कुंडल मत देना। जब तक वे हैं तब तक कोई भी तुम्हें युद्ध में हरा नहीं पायेगा। अगर तुमने उन्हें दान में दे दिये तो तुम्हारी मौत निश्चित है। इसमें इंद्र की स्वार्थ-बुद्धि है। अर्जुन से युद्ध करने की क्षमता केवल तुम्हीं में है। उसकी रक्षा के लिए ही वह तुमसे यह वर माँग रहा है। यदि तुमने ये कवच-कुंडल उसे दे दिये तो अर्जुन के हाथों तुम्हारी मृत्यु निश्चित है।"

"भगवान, आप स्वयं चले आये और हितबोध किया। यही मेरे लिए सब कुछ है। किन्तु अपने व्रत के अनुसार ब्राह्मण की किसी इच्छा को ठुकराना मुझसे संभव नहीं। इसी दान-गुण के कारण लोक में मुझे ख्याति प्राप्त हुई है। इस स्थिति में देवेंद्र जैसा देवता स्वयं मेरे पास आये और दान माँगे तो मैं कैसे अस्वीकार कर सकता हूँ। मुझे अपने कवच-कुंडल देने ही पड़ेगें। इससे मेरी कीर्ति और बढ़ेगी। पांडवों की अपकीर्ति होगी। जब कीर्ति ही खो दें तो जीने से क्या लाभ ?" कर्ण ने कहा।

"पगले कहीं के। शरीर ही जब न रहा तो कीर्ति से क्या लेना-देना। वह तो शव का

अलंकार हुआ। तुम और अर्जुन अवश्य ही युद्ध करनेवाले हो। जब तक कवच-कुंडल हैं तब तक अर्जुन तुम्हें नष्ट नहीं पहुँचा सकेगा, चाहे इंद्र भी उसके साथ हो। अतः किसी भी स्थिति में उसे इन्हें मत दो।" सूर्य ने उसे समझाया।

"देव, मुझे क्षमा कीजिये। ब्राह्मण आये और मुझसे दान माँगे तो प्राण भी देना मेरा नियम है। बिना कवच-कुंडलों की सहायता के मैं अर्जुन को पराजित कर सकता हूँ। परशुराम, द्रोण के दिये हुए अस्त्र मेरे पास हैं।" कर्ण ने अपना विश्वास प्रकट किया।

"अगर तुम्हारा यही हठ है तो एक काम करो। इंद्र के पास एक अमोघ शक्ति है। उससे बलशाली शत्रु को भी मार सकते हो। वह शक्ति शत्रु को मार डालती है और वापस आती है। जब इंद्र तुमसे कवच-कुंडल दान में माँगेगा तब उससे यह शक्ति माँगो। इसे प्राप्त होने पर तुम अर्जुन को भी जीत सकते हो।" सूर्य ने कहा।

इतने में कर्ण की आँखें खुल गयीं। उसने देखा कि सबेरा हो गया। वह इंद्र के आगमन की प्रतीक्षा करने लगा। वह हर दिन मध्याह्न सूर्य की उपासना करता था और ब्राह्मणों को दान देता था। आज उस समय पर इंद्र ब्राह्मण के वेष में आया और 'भिक्षां देहि' कहा।

कर्ण ने अपनी आदत के अनुसार उसकी पूजा की और पूछा "ब्राह्मण, तुम्हें क्या चाहिये? क्या तुम्हें सुंदर स्त्रीयाँ चाहिये? उपजाऊ भूमि चाहिये? अच्छी व स्वस्थ गायें चाहिये? कहो, तुम्हें क्या चाहिये?"

"पुत्र, मुझे इनमें से कुछ नहीं चाहिये। अपने सहज कवच-कुंडलों को काटकर दो।" इंद्र ने माँगा।

"ब्राह्मणोत्तम, ये कवच-कुंडल मेरे प्राण-रक्षक हैं। इनके अलावा कुछ और माँगो।" कर्ण ने सविनय कहा।

"नहीं, नहीं, मुझे ये कवच-कुंडल ही चाहिये।" इंद्र ने कहा। कर्ण हँसा और कहा "मैं जानता हूँ कि तुम इंद्र हो। तुम जैसे देव को चाहिये कि हम जैसे साधारण मनुष्यों को दान दे। किन्तु तुम्हीं स्वयं दान माँगने चले आये। यह तुम्हें शोभा नहीं देता। अगर मैं ये कवच-कुंडल तुम्हें दे दूँ तो शत्रुओं के हाथों मेरा पराजित होना निश्चित है। इससे मेरी अपकीर्ति होगी। तुम मुझे अपनी अद्भुत शक्ति प्रदान करो।" कर्ण ने पूछा।

इंद्र ने कहा "अवश्य ही अपनी शक्ति

दूँगा। किन्तु उससे तुम एक ही मनुष्य का संहार कर सकते हो। जैसे ही तुम उसका प्रयोग करोगे, वैसे ही वह उस व्यक्ति का संहार करेगी और मेरे पास लौट आयेगी। तुम्हें अगर कोई आपत्ति न हो तो मुझसे लो।''

''मेरा एक ही शत्रु है। उसे मारना ही मेरा एकमात्र लक्ष्य है'' कर्ण ने कहा। ''मैं जानता हूँ। तुम इस शक्ति से अर्जुन को मारना चाहते हो। किन्तु जब तक कृष्ण उसके साथ है, तब तक उसे मारना तुम्हारे लिए संभव नहीं होगा। एक बात याद रखो। इस शक्ति का उपयोग तभी करना, जब तुम्हारा प्राण संकट में हो। जब कि तुम्हारे सारे अस्त्र-शस्त्र निष्फल हो जाते हैं। साधारण मनुष्यों पर इसका प्रयोग करोगे तो यह शक्ति तुम्हारे ही प्राण हरेगी।'' इंद्र ने उसे सावधान किया।

कर्ण ने चाहा कि जब वह अपने कवच-कुंडल काटेगा तब उसका रूप विकृत न हो जाए। इंद्र ने उसकी इच्छा मान ली। कर्ण ने इंद्र से शक्ति ग्रहण की और अपने कवच-कुंडल काटकर उसे दिये।

जब पांडवों को मालूम हुआ कि कर्ण ने कवच-कुंडल दान में दे दिये तो उनके आनंद की सीमा न रही। वे जानते थे कि कर्ण महाबली हैं। जन्म के साथ-साथ प्राप्त ये कवच-कुंडल जब तक उसके पास हैं, तब तक उसे जीतना संभव नहीं है। उन्होंने मन ही मन इंद्र भगवान को अपनी कृतज्ञता जतायी। कौरवों को यह जानकर बहुत दुख हुआ। इंद्र के इस कुत्सित कार्य पर वे टिप्पणी करने लगे कि देवता होकर भी कैसा दुष्कर्म

करने पर तुल गया।

पांडव जब द्वैतवन में थे तब एक ब्राह्मण दौड़ा-दौड़ा आया और कहने लगा, ''मैंने अपना जनेऊ पेड़ की टहनी में लटकाया। तब वहाँ एक बारहसिंघा आया और अपने शरीर को उस पेड़ से रगड़ता रहा। मेरा जनेऊ उसकी सींग में फंस गया। मेरे जनेऊ के साथ वह बारहसिंघा भाग गया। उसके बिना मेरा अग्निकार्य नहीं हो सकता। कृपया मेरा जनेऊ मुझे दिलाइये।''

पांडव तुरंत उस बारहसिंघा के पीछे दौडे और उसपर बाणों की बौछार करने लगे। पर कोई भी बाण उसे छू नहीं सका। देखते-देखते वह घने जंगल में गायब हो गया।

पाँचों पांडव थक गये और उन्हें बड़ी प्यास लगने लगी। थकावट के मारे वे एक पेड़ की
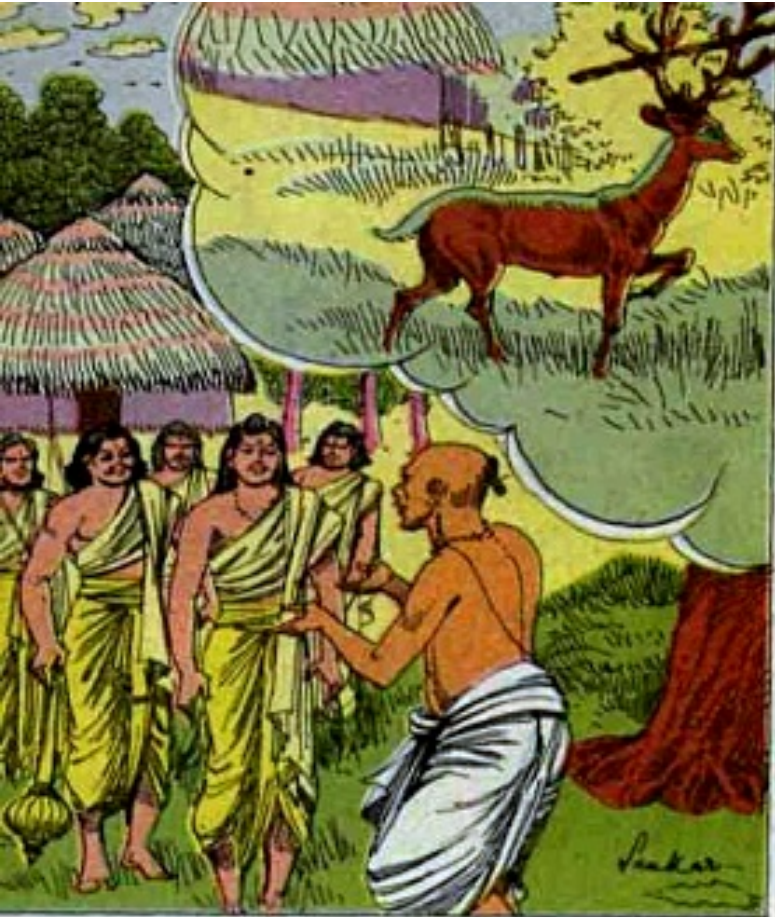
शीतल छाया में बैठ गये। तब नकुल ने कहा "हम कष्ट सहते जा रहे हैं। लगता है कि इन कष्टों का अंत नहीं होगा। पता नहीं, इसका क्या कारण है ?"

धर्मराज ने कहा "पूर्वजन्म में पाप किये हों तो उसका यह फल है। हमें कष्ट झेलने ही पड़ेंगे।"

"द्रौपदी उस दिन जब सभा में बुलवायी गयी थी, उसी दिन मुझे उन दुष्टों को मारना था। मैंने ऐसा नहीं किया, इसीलिए हम कष्ट भुगत रहे हैं।" भीम ने कहा।

"जुआ खेलते समय कर्ण, जो मुँह में आया बकता रहा। अनाप-शनाप बोलता रहा। मैंने चुपचाप सब कुछ सह लिया। हम असमर्थ होकर अरण्य आ गये। इसी कारण हम कष्ट झेलते जा रहे हैं।" अर्जुन ने कहा।

"उस कुटिल शकुनि को उसी समय मार डालते तो हमें इन कष्टों को झेलने की नौबत ही न आती।" सहदेव ने कहा।

धर्मराज ने नकुल को संबोधित करते हुए कहा "हम सब के सब प्यासे हैं। इस वृक्ष पर चढ़ना और देखना कि क्या कहीं जल है? तरकश में पानी भरकर लाना।"

नकुल वृक्ष पर चढ़ गया और देखा कि निकट ही सरोवर है। वहाँ जाकर अपनी प्यास बुझाने और अन्यों के लिए जल लाने निकला। वहाँ जाकर जब पानी पीने ही वाला था कि इतने में अशरीर वाणी सुनायी पड़ी "ठहर। जो प्रश्न मैं पूछूँगा, उनका उत्तर दो और फिर पानी पीना। यह सरोवर मेरा है।"

नकुल ने उन बातों की परवाह नहीं की और पानी पी लिया। तुरंत भूमि पर गिरा और मर गया। नकुल के गये बहुत समय हो गया, फिर भी वह नहीं लौटा, इसलिए धर्मराज ने सहदेव को भेजा। सहदेव जब सरोवर के पास आया तो उसने देखा कि नकुल मरा पड़ा है। उसे अपार दुख हुआ। उसे भी बड़ी प्यास लग रही थी तो पानी हाथ में लिया और पीने ही वाला था कि पूर्ववत् अशरीर वाणी की चेतावनी सुनायी पड़ी। उसने भी नकुल की ही तरह लापरवाही बरती। वह भी मर गया।

धर्मराज ने अपने भाइयों का पता लगाने अर्जुन को भेजा। अर्जुन ने दोनों मृत भाइयों को सरोवर के पास देखा। वह इर्द-गिर्द देखने लगा कि किसके हाथों वे दोनों भाई मरे पड़े हैं। पर उसे वहाँ एक चिड़िया भी दिखायी

नहीं पड़ी। जब वह भी प्यास के मारे पानी पीने जा रहा था, तब उसे भी वही अदृश्य वाणी सुनायी पड़ी।

"सामर्थ्य हो तो सामने आ जा। छिपे-छिपे बात क्यों कर रहे हो" कहकर अर्जुन ने उस दिशा में बाण छोड़े, जिस दिशा से ध्वनि आ रही थी। थककर उसने भी पानी पिया और वह भी बेहोश होकर गिर गया और मर गया। उसके बाद भीम भी वहाँ आया और अशरीर वाणी की चेतावनी की परवाह किये बिना पानी पिया। वह भी अन्य भाइयों की तरह मर गया।
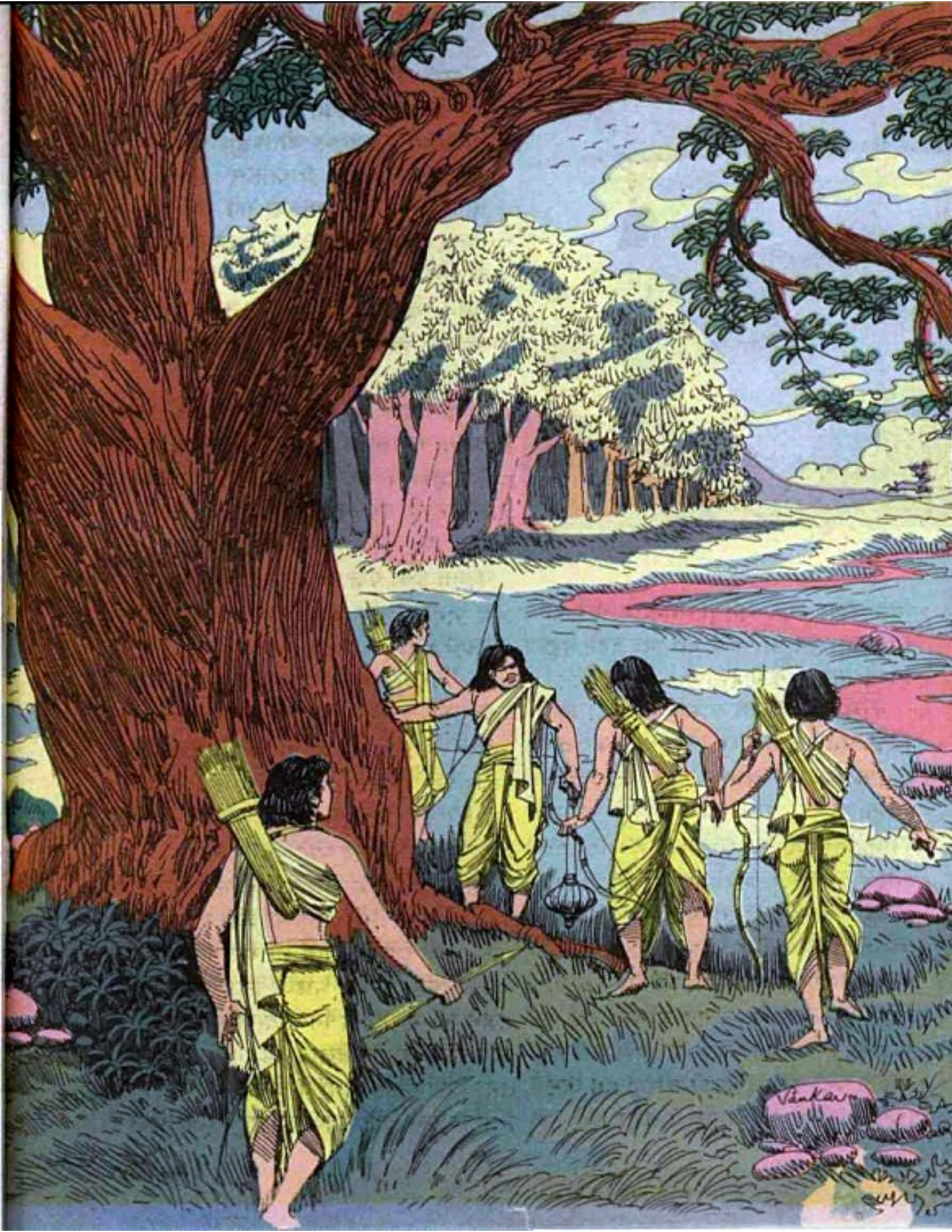
आखिर धर्मराज स्वयं भाइयों की खोज में निकला। उसने सरोवर के पास मरे चारों भाइयों को देखा। अपने भाइयों को उस स्थिति में पाकर उसे अपार दुख हुआ। तब उस अशरीर वाणी ने यों कहा।

"मैं एक बक हूँ। इस सरोवर की मछलियों को खाकर जीता हूँ। मेरे प्रश्नों का समाधान देने से तिरस्कार करके पानी पीनेवाले तुम्हारे भाइयों को मैंने ही मार डाला। तुम ही सही, मेरे प्रश्नों के समाधान दो और जितना पानी चाहिये, पी लो। अगर तुमने भी अपने भाइयों की तरह मूर्खतापूर्ण व्यवहार किया तो तुम्हारी भी यही स्थिति होगी।"

धर्मराज ने कहा "मेरे भाई किसी साधारण पक्षी के हाथों मरनेवालों में से नहीं हैं। तुम बक नहीं हो। बताना, तुम कौन हो और तुम्हें क्या चाहिये?"

"हाँ, मैं बक नहीं हूँ। यक्ष राजा हूँ" कहता हुआ यक्ष प्रकट हुआ। उसने धर्मराज से कहा "अगर तुम्हें पानी चाहिये तो मेरे प्रश्नों के उत्तर दो।"

"पूछो, मुझसे हो सका तो मैं उत्तर दूँगा" धर्मराज ने कहा। यक्ष ने अनेकों प्रश्न पूछे। धर्मराज के उत्तरों से वह संतृप्त हुआ।

यक्ष ने कहा "मैं तुम्हारे उत्तरों से संतुष्ट हूँ। तुम्हारे चारों भाइयों में से एक को जीवित करूँगा। कहो, किसे जीवित करूँ?"

"यक्षराज, नकुल को प्राण प्रदान कीजिये।" धर्मराज ने कहा।

"भीम महाबली है। अर्जुन पराक्रमी है। तुमने उन दोनों को छोड़कर सौतेली माँ के पुत्र को ही प्राण-दान देने की प्रार्थना क्यों की?" यक्ष ने पूछा।

"कुन्ती और माद्री मेरे पिताश्री की दो पत्नियाँ हैं। कुन्ती के पुत्रों में मैं एक जीवित

हूँ। माद्री के पुत्रों में से कोई एक जीवित हो, यह मैंने उचित समझा, अपना धर्म माना।" धर्मराज ने कहा।

"बहुत अच्छा। धर्म-द्रोह न करना तुमने अपना उत्तम धर्म माना। तुम्हारे सब भाई जीवित होंगे।" यक्ष ने कहा।

तक्षण ही भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव उठकर बैठ गये। उन्हें देखकर लगता था, मानों अभी-अभी नींद से जागे हों। वे अब भूखे-प्यासे भी न थे।

"आप कोई साधारण यक्ष नहीं हैं। बताइये, आप कौन देवता हैं?" धर्मराज ने पूछा। यक्ष ने कहा "मैं धर्मदेवता हूँ। तुम्हारा पिता हूँ। तुम्हारी परीक्षा लेने आया हूँ" देवता ने कहा। "देव, ब्राह्मण के जनेऊ को एक बारहसिंघा ले गया है। उसके बिना वे अग्निकार्य नहीं कर सकते। आशीर्वाद दीजिये कि उनके दैनिक कार्यक्रम में कोई विघ्न न आये।" धर्मराज ने कहा।

"मैंने ही उस जंतु को तुम लोगों को यहाँ ले आने के लिए भेजा था। लो, ब्राह्मण का यह जनेऊ। माँगो कोई वर।" धर्मदेवता ने कहा।

"वनवास का बारहवाँ वर्ष समाप्त होने जा रहा है। हमें वर दीजिये कि अज्ञातवास में हमें कोई न पहचान पाये।" धर्मराज ने कहा। धर्मदेवता ने वह वर उन्हें प्रसादा और आशीर्वाद दिया।

ब्राह्मण को पांडवों ने जनेऊ दिया। उसके अग्निकार्य में अब कोई विघ्न नहीं होगा, इसलिए ब्राह्मण ने पांडवों को अपनी कृतज्ञता जतायी। उन्हें आशीर्वाद दिया कि उनकी विजय हो।

पांडवों का वनवास-काल समाप्त हो गया। अब तक उनके साथ जो ब्राह्मण हैं, उनसे बिदा लेते हुए उन्होंने कहा "उत्तम ब्राह्मणो, नियम के अनुसार हमें एक और वर्ष अज्ञातवास करना होगा। अतः आपसे बिदा ले रहे हैं।" ब्राह्मणों ने आशीर्वाद दिया कि उनका अज्ञातवास निर्विघ्न हो।

तब धौम्य ने धर्मराज से कहा "शीघ्र ही आप लोगों के कष्ट दूर हो जायेंगे।"

पांडव, द्रौपदी व धौम्य सहित अपने आश्रम से निकले। थोड़ी दूर जाने के बाद एक एकांत व प्रशांत स्थल पर रुक गये। वहाँ बैठकर अज्ञातवास के कार्यक्रम के संबंध में रहस्य-चर्चा करने लगे।

'चन्दामामा' की ख़बरें

स्वागत की तैयारियाँ

२,००० दिसंबर ३१ को बीसवीं शताब्दी की समाप्ति होगी। इस शताब्दी के प्रथम हज़ार दिनों का कौंटडौन अप्रैल, छे तारीख को पारिस के ईफिल टवर में प्रारंभ हुआ। इक्कीसवीं शताब्दी का सुस्वागत करने के लिए संसार भर के सब नगरों में बड़े पैमाने पर तैयारियाँ शुरू हो गयीं। २०००, जनवरी १ से इन उत्सवों का आरंभ होगा। इस शताब्दी व स्वागत करने का प्रथम सुअवसर न्यूज़ीलैंड के ओकलांड नगर को प्राप्त हुआ।

ऊँची मीनार

थायवान की राजधानी टायपी नगर में लोहे से बनी एक मीनार का निर्माण पूरा होनेवाला है। इस निर्माण की पूर्ति के बाद गिन्नीस बुक आफ रिकार्डस में यही मीनार संसार की सबसे ऊँची मीनार के नाम से दर्ज होगी। इस मीनार की ऊंचाई है ५५० मीटर। यह केनाडा के टोरंटो के सबसे ऊँचे सी.इन.टवर से दस मीटर ऊँची है। ७३,०००,००० अमेरेकी डालरों का व्यय करके इसका निर्माण हो रहा है। इस टायपी टवर के निर्माण के पहले सबसे ऊंचे माने जानेवाले टोक्यो टवर (३३३ मीटर) ईफिल टवर (३३० मीटर) इसके सामने छोटे लगेंगे।

अखंड पारायण

इस साल अप्रैल १६ को श्रीरामनवमी उत्सव संपन्न हुए। इससे पाँच दिनों के पहले कुछ भक्तों ने सरयू नदी तट पर 'महायज्ञ' शुरू किया। रामायण में बताया गया कि श्रीरामचंद्र सरयू नदी को पार करके वनवास गये। अब जो 'महायज्ञ' शुरु हुआ वह आनेवाली श्रीरामनवमी तक याने १९९८ अप्रैल, बीस तारीख़ तक चलता रहेगा। इस अवसर पर निर्विघ्न सीताराम नाम का पारायण हो, इसके लिए लगभग २१,००० पंडितों की नियुक्ति हुई।

फ्रेंच अनुवाद

सिखों के पवित्र ग्रंथ 'ग्रंथ साहेब' का अनुवाद हाल ही में फ्रेंच भाषा में हुआ। सोलह पृष्ठों के अनुबंध के साथ १६७६ पृष्ठों का यह महाग्रंथ है। डा. बर्नाइल सिंग ने यह अनुवाद किया। वे केनाडा के राजकर्मचारी थे। हाल ही में सरकारी सेवा से निवृत्त हुए। अनुवाद करने में बारह साल लगे। विदेशों में जाकर बसे सिखों में से अधिकतर सिख केनाडा में ही हैं। वहाँ की राजभाषाएँ हैं-अंग्रेजी और फ्रेंच। केनाडा और फ्रांस के अलावा दुनिया भर के चालीस देशों में फ्रेंच भाषा बोलनेवाले हैं। हमारे देश के पांडिच्चेरी, कारैक्काल, माही, यानाम आदि प्रदेशों में भी फ्रेंच भाषा बोलनेवाले लोग मौजूद हैं।

शिशु क्यों रोते हैं ?

दूध की ज़रूरत पड़े या माँ की, तो बच्चे रोने लगते हैं। आराम से सोने की व्यवस्था के लिए बच्चे रोते रहते हैं। सब माँएँ उनकी इस आवश्यकता से भली-भांति परिचित हैं। इस विषय को लेकर अमेरीका के - स्विच रिकग्नशिन एंड लांग्वेज अंडरस्टांडिंग सर्वीसेस लाबरेटरी, केनाडा यूनिवर्सिटी आफ ब्रिटिश के कोलंबिया शास्त्रज्ञ अनुसंधान कर रहे हैं। शिशुओं की तरह-तरह की रुलाइयों का परिशीलन करके वे टेप कर रहे हैं। उनके बारे में विश्लेषण कर रहे हैं। उनका कहना है कि शिशुओं की रुलाइयों के आधार पर यह जाना जा सकता है कि उनकी आवश्यकताएँ क्या हैं।

कोणार्क सूर्य देवालय

ओरिस्सा राज्य में स्थित सुप्रसिद्ध कोणार्क देवालय तेरहवीं शताब्दी में निर्मित हुआ। यह सूर्य का देवालय है। हमारे देश के बहुत ही ऊँचे देवालयों में से यह एक है। लगभग दो सौ फुट की ऊँचाई का है। प्रवेशद्वार से क्रमपूर्वक जो सीढियाँ हैं, उनके दोनों ओर अश्वशिल्प सुसज्जित हैं। पूरा आलय रथ के आकार में दिखायी देता है। हमारे पुराण कहते हैं कि सात अश्वों से सजे रथ में बैठकर सूर्यभगवान आकाश-मार्ग में विचरते हैं।

गंगा वंश के नरसिंहदेवराज की देखरेख में इस आलय का निर्माण हुआ। कहते हैं कि इसके निर्माण-कार्य में १,२०० शिल्पकारों ने रात-दिन निर्विराम परिश्रम किया और इसके निर्माण में सोलह साल लगे। इसके निर्माण में चालीस करोड़ रुपयों का व्यय हुआ।
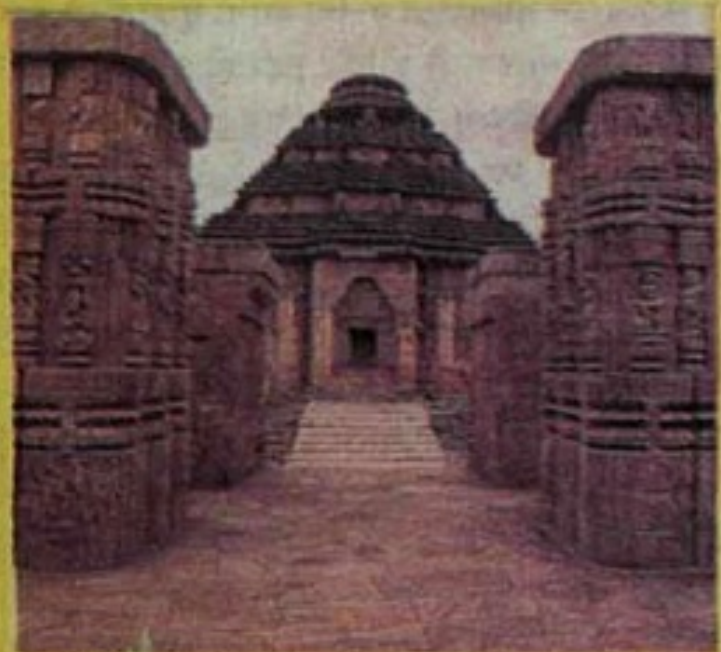
कोणार्क आलय के शिल्प अब भी दर्शकों को मंत्रमुग्ध करते हैं और उनके हृदयों को अपने सौंदर्य से सुख पहुँचाते हैं। हृदय को मुग्ध करने वाली ओडिस्सी नृत्य-भंगिमाओं तथा नाट्य-कलाकारों के हाव-भावों से शोभायमान सूर्य भगवान के आलय के ये अद्भुत शिल्प रसज्ञ दर्शकों को सजीव लगते हैं। उनकी शोभा देखते ही बनती है।

पुराणकाल के राजा

जानश्रुति - रैक्व

जानश्रुति धर्मपरायण दक्ष राजा था। हर दिन राजकर्मचारियों तथा गुप्तचरों के द्वारा जनता की परिस्थितियों के बारे में जानकारी प्राप्त करता था। जनता की समस्याओं का वह परिष्कार करता था, उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करता था और दृढ़ रूप से जब उसे ज्ञात होता था कि जनता सुखी हैं, वे किसी गंभीर समस्या से पीडित नहीं हो रहे हैं तो तभी निद्रा की गोद में जाता था। वह आदर्श राजा था।

एक दिन पूर्णिमा की रात को वह राजमहल के ऊपर टहल रहा था। उसने देखा कि आकाश में कुछ राजहंस उड़ रहे हैं। राजभवन से होते हुए वे जा रहे हैं और आपस में बातें कर रहे हैं। राजा पक्षियों की भाषा जानता था। उसने उनकी बातें सुनीं।

एक राजहंस ने कहा "इस राजभवन के ऊपर कोई विचित्र कांति दिखायी दे रही है"।

"हाँ, मैं भी कांति को देख रहा हूँ। जो कांति हमें दिखायी दे रही है, वह राजा जानश्रुति का तेजस्व है। वह सत्यव्रती है, कर्तव्यनिष्ठ है, धम-शासक है, इसीलिए उसके चारों ओर तेजस्विता का वलय घिरा हुआ है। किन्तु वह उसे स्वयं देख नहीं पाता।" दूसरे हंस ने कहा।

"मानता हूँ कि जानश्रुति धर्म प्रभू हैं। यह निस्संदेह सत्य है। किन्तु इसके पहले मैंने एक रात को रैक्व राजा के प्रासाद पर उड़ते हुए इससे भी अत्यधिक प्रकाशमान कांति देखी" तीसरे हंस ने कहा।

इसके बाद सब हंस मेघों के पीछे छिप गये। हंसों की बातें सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसे इस बात पर अति प्रसन्नता हुई कि इस भूमि पर एक और राजा भी है, जो उससे भी बड़ा धर्मपरायण व कर्तव्यनिष्ठ राजा है। उस रात को वह आराम से सोया। दूसरे दिन सबेरे उसने मंत्रियों व दूतों को बुलवाया और रैक्व राजा के बारे में और जानकारी पायी। वह स्वयं उससे मिलने गया और उससे बातें की। युवक रैक्व की धर्म-परायणता पर वह बहुत ही प्रसन्न हुआ। अपनी पुत्री का विवाह उससे करवाया और अपना राज्य भी उसे सौंपा।

जानश्रुति विनयसंपन्न राजा था। अधिकार-गर्व उसे छू तक नहीं गया था। अपने से भी उन्नत व्यक्ति को पाकर उसमें ईर्ष्या उत्पन्न नहीं हुई बल्कि उसके प्रति प्रेम व श्रद्धा की भावना जगी। वह उत्तम कोटि का महापुरुष था, आदर्श राजा था।

क्या तुम जानते हो?

अद्भुत विनोद - कार्यक्रम

ओपेरा एक संगीत नाटक प्रक्रिया है। इन संगीत नाटकों में गायक ही अभिनय करते हैं। वाद्यकारों का समूह साथ होता है। अद्भुत रूप से अलंकृत पर्दे होते हैं। वेषधारी रंग बिरंगे वस्त्र पहनते हैं। ये वस्त्र चमकीले होते हैं। यह संगीत नाटक प्रक्रिया प्रारंभ हुई, सोलहवीं शताब्दी में। ग्रीक, रोमन पुराणों से इसकी कथावस्तु चुनी जाती थी। अधिकाधिक काल तक ओपेरा केवल संपन्न व्यक्तियों के विनोद-कार्यक्रम का अंश था। अठारहवीं शताब्दी के मध्यकाल में यूरोप के सभी नगरों व शहरों में संगीत नाटक प्रदर्शिनी शालाओं का निर्माण हुआ। गेय नाटकों के साथ-साथ रंगमंच पर परंपरागत संगीत कार्यक्रमों का भी आयोजन होता था।

इंद्रधनुष

कमल पुष्पों का मंदिर

कमल के पुष्प के लिए भी मंदिर ! क्या इस पर तुम्हें आश्चर्य हो रहा है? अब हमारी राजधानी दिल्ली में यह मंदिर एक विशेष आकर्षण का केंद्र है। आठ हज़ार मज़दूर इस मंदिर के निर्माण में छे सालों तक लगे रहे। रात-दिन इसके निर्माण-कार्य में मेहनत की। इसके निर्माण में एक सौ बीस लाख डालरों का व्यय हुआ। यह कमल पुष्प आलय 'बहाई मंदिर' के नाम से भी पुकारा जाता है। इस आलय के बाहर तीन जोडियों के पुष्पदल हैं। इनके अंदर नौ पुष्पदल हैं। चमकते श्वेत रंग में यह मंदिर शोभायमान दिखाई पड़ता है। इस मंदिर के निर्माण के लिए सिमेंट ख़ास तौर से कोरिया से मंगाया गया है।
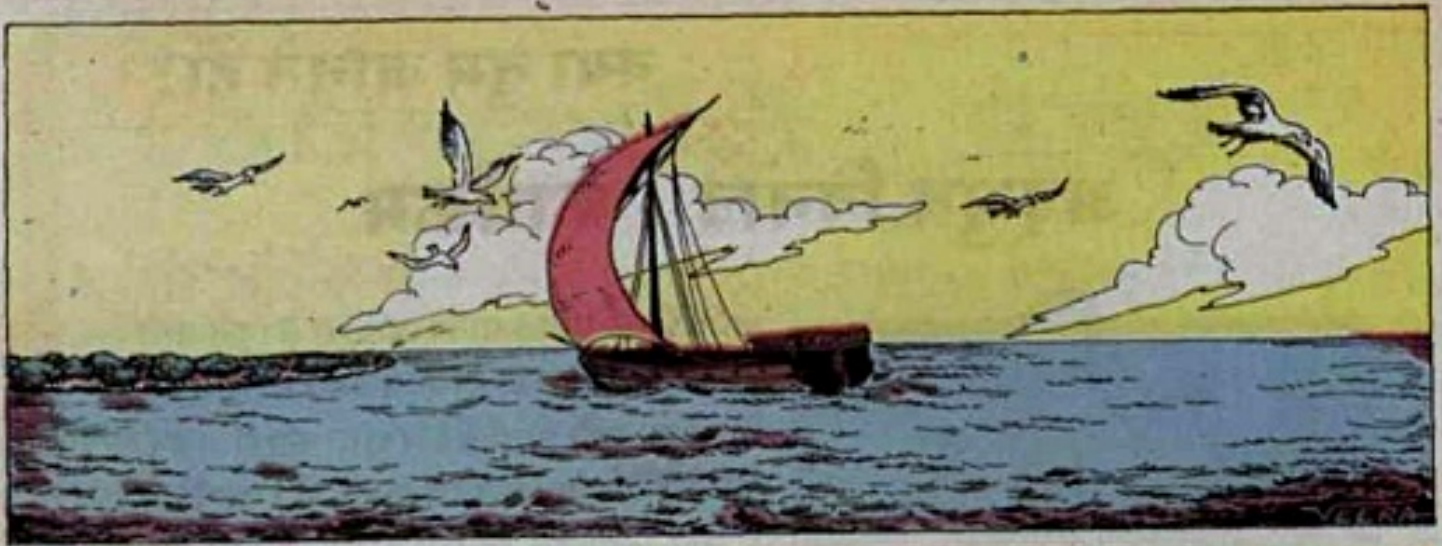
भाग्य-दुर्भाग्य

(द्वितीय भाग)

राजा के निर्णय के अनुसार एक दिन चार सैनिक और मल्लाह आवश्यक सामानों के साथ ग़रीब को लेकर राक्षस-द्वीप निकल पड़े।

राजा को इस बात पर दुख नहीं हो रहा था कि मैं ग़रीब को सता रहा हूँ। उल्टे उसे इस बात की खुशी थी कि मैं ग़रीब को उसके अपराधों के लिए दंड दे रहा हूँ। वह गरीब से इसलिए इतना नाराज़ था कि वह स्वयं अपना महत्व, अपनी शक्ति नहीं जानता। हर बात को वह भगवान के भरोसे छोड़ देता है। मनुष्य को भगवान के हाथों का कठपुतला मानता है। उसका दावा है विधाता मनुष्य के ललाट पर जो लिखता है, वही होता है; बिगाड़नेवाला और सँवारनेवाला भी विधाता ही है। ग़रीब के विचारों से राजा बिल्कुल सहमत नहीं था। वह मनुष्य की शक्ति में संपूर्ण विश्वास रखता था। उसका मानना था कि मनुष्य ने समस्त शक्तियाँ स्वयं प्राप्त की हैं। अपने बुद्धि-बल पर वह जी रहा है और ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए आवश्यक सुविधाएँ एकत्र कर रहा है। भगवान नामक अदृश्य शक्ति के सहारे की भला उसे क्या आवश्यकता है? राजा को तो उस अदृश्य शक्ति के अस्तित्व में कोई विश्वास ही नहीं।

इसलिए निकलने के पहले राजा ने निर्दयतापूर्वक ग़रीब से कहा "ठीक छे महीनों के बाद इसी दिन, इसी नौका को, इन्ही सैनिकों को तुम्हें ले आने भेजूँगा। तब तक तुम ज़िन्दा रहे तो उस दिन तट पर आकर प्रतीक्षा करना। वे ठीक तीन घंटों तक ही तुम्हारी प्रतीक्षा में रहेंगे।"

'हाँ' के भाव में ग़रीब ने सिर हिलाया और भागवान का स्मरण करते हुए नौका में बैठ गया। उस समय उसकी मनोस्थिति बड़ी ही विचित्र थी। स्वयं वह निर्णय नहीं कर पा

मनोहर जोशी

रहा था कि यह उसकी भलाई के लिए हो रहा है या बुराई के लिए। उसे मालूम था कि राक्षस-द्वीप में पहुँचने के बाद राक्षस के हाथों उसका मारा जाना निश्चित है। भगवान पर उसका अपार व दृढ़ विश्वास था, इसलिए उसने अपना पूरा भार भगवान पर छोड़ दिया और निश्चिंत हो गया।

मल्लाह ने नौका तेज़ी से चलायी और निर्धारित समय के पहले ही राक्षस-द्वीप पहुँचाया। सैनिकों ने उसे जल्दी उतरने के लिए कहा। ग़रीब ने जैसे ही राक्षस-द्वीप पर क़दम रखा, सैनिकों ने आहार पदार्थों को और इतर सामग्री को भूमि पर फेंक दिया। जैसे ही यह काम पूरा हो गया, नौका चल पड़ी और देखते-देखते ओझल हो गयी। चारों ओर अनंत समुद्र, बीच में भूमि और उस भूमि पर एकमात्र ग़रीब।

अकस्मात् ही इस भयंकर एकांत से ग़रीब घबरा गया। उससे दुख सहा नहीं गया। जहाँ खड़ा था, वहीं बैठ गया और फूटफूटकर रोने लगा। कहने लगा "हे भगवान, मुझे कैसी बदतर ज़िन्दगी बख़्शी तुमने। इस अकेलेपन व दुख से भरी ज़िन्दगी से मौत ही कहीं अच्छी है। जल्दी मेरा अंत कर दो। उस राक्षस के गर्जन को सुनकर मेरे दिल की धड़कन बंद हो जाए, इसके पहले ही मुझे मार डालना। सुख की यह मौत ही सही, मेरे नसीब में लिखो।"

भय और चिंता के कारण उसकी भूख भी मिट गयी। उसने सोचा, जब मरना निश्चित है तो खा-पीकर क्या करूँगा। इसलिए उसने आहार पदार्थों की ओर देखा तक नहीं। वह ज़ोर-ज़ोर रोता रहा और जब थक गया,

बेहोश होकर ज़मीन पर गिर गया।

जब वह जागा तब सूरज की किरणें उसपर गिर रही थीं। उस कोमल प्रकाश में आपने आपको ज़िन्दा पाकर उसे बेहद खुशी हुई। उसने सुन रखा था कि राक्षस मनुष्य की गंध आसानी से सूँघ लेते हैं और उसके पास आ जाते हैं। पर इतना समय बीत जाने के बाद भी कोई राक्षस उसके पास नहीं आया, जिसका उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

फिर भी ग़रीब वहाँ से नहीं हिला। सोचा कि आज यहीं रहूँ और फिर देखूँ कि क्या होनेवाला है। जब-जब भूख लगती थी, टोकरी से फल निकाले, मिठाइयाँ लीं और खा लीं। रात को भी वह वहीं सो गया।

तीसरे दिन सवेरे भी अपने को सजीव पाकर ग़रीब में उत्साह पैदा हो गया। अब

उसमें धीरज आ गया। वह निड़र होकर धीरे-धीरे द्वीप के अंदर पैदल चलने लगा। सायंकाल तक वह पैदल चलता रहा पर, उसे राक्षस का कहीं पता न चला। अंधेरा छाते-छाते वह एक फलवृक्षों से भरे प्रदेश में ठहर गया और डरते-डरते वहीं सो गया।

चौथे दिन सबेरे ही उठा और फिर से पैदल जाने लगा। मध्याह्न होते-होते वह द्वीप के बीचों बीच पहुँचा। वहाँ दिखाये दिये दृश्य को देखकर उसका दिल भय से काँप उठा।

विशाल एक समतल प्रदेश में बहुत ही लंबा अस्थिपंजर पड़ा हुआ था। उसके आकार-प्रकार की विशिष्टताओं को उसने भली-भांति देखा और उसने निश्चय कर लिया कि यह राक्षस-द्वीप के विचित्र राक्षस का ही अस्थिपंजर है। उसकी आँखों से आनंद के आँसू निकल पड़े और उसने हाथ जोड़कर भगवान को प्रणाम किया।

ग़रीब ने निश्चय कर लिया कि विचित्र राक्षस मर गया और इस द्वीप में उसे कोई ख़तरा नहीं है। उसका धैर्य बढ़ गया। फलवृक्षों में लटकते फलों को तोड़ा और खाता रहा।

पाँचवें दिन दुपहर को उसने एक और विचित्र दृश्य देखा। एक महावृक्ष के नीचे, भूमि पर अनगिनत वज्र, वैडूर्य, उत्तमकोटि के रत्न, मोती, सुवर्ण आभूषण आदि ढेर के ढेर पड़े हुए हैं।

इतनी बेशुमार निधि को देखकर ग़रीब को बहुत अचरज हुआ। उसने सोचा "यह सब राक्षस की संपदा होगी, जिसे उसने यहाँ विश्राम लेने आये व्यापारियों व नाविकों को मारकर लूटा होगा।" उसे उनपर दया भी आयी, जो राक्षस के हाथों मर गये। वह वहीं बैठकर बहुत ही देर तक सोचता रहा। फिर वह समुद्र के तट पर गया और आहार-पदार्थों से भरी दो बड़ी थैलियों को खाली करके ले आया। उन थैलियों में जितना सोना व रत्न भर सकते थे, भर लिया। जब वह इस काम में व्यस्त था, तब काँटों के चुभने के कारण उसके दोनों हाथ जख्मी हो गये। फिर भी उसने इसकी परवाह नहीं की और अपना काम पूरा कर लिया। जब वह लौटने वाला था तो निधि से थोड़ी दूरी पर पड़ी छोटी-सी चमड़े की एक थैली ने उसकी दृष्टि को आकर्षित किया।

उसने तुरंत थैलियाँ नीचे रखीं और चमड़े की थैली अपने हाथ में ली। खोलकर उसने देखा कि उसमें आँखों को चकाचौंध करनेवाला जगमगाता छोटा-सा एक मणि है। उस मणि

को हाथ में लेकर उसे घुमा-फिराकर ग़ौर से देखने लगा। बस, उस मणि के स्पर्श मात्र से उसके ज़ख्मी हाथ बिल्कुल ठीक हो गये। घाव की कोई निशानी भी नहीं रही। उसका चर्म पूर्ववत् कांतिमय हो गया। इस विचित्रता पर चकित होते हुए उसने दूसरे घावों पर भी मणि रख दिया। वे घाव भी नदारद हो गये।

ग़रीब की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने भगवान को अपनी कृतज्ञता व्यक्त की और मणि को चमड़ी की उसी थैली में सुरक्षित रखा। अब वह समुद्र-तट पर पहुँच गया।

इस घटना के चार दिनों के बाद ग़रीब ने देखा कि तट से थोड़ी और दूरी पर बायीं ओर एक बड़ा व्यापारिक जहाज़ धीमी गति से जा रहा है। वह तट पर दौड़ता रहा और चिल्लाता रहा। अपने दुपट्टे को हिला-हिलाकर उनकी दृष्टि को आकर्षित करता रहा। थोड़ी देर बाद मल्लाहों ने जहाज़ रोका और ग़रीब को माल-सहित चढ़ा लिया। जहाज़ चल पड़ा।

जहाज़ में लोगों ने उसे घेर लिया और बड़ी ही आतुरता से पूछने लगे "साहब, आप कौन हैं? उस राक्षस-द्वीप में कोई भी क़दम रखने का साहस ही नहीं करता। इस द्वीप में आप कैसे अकेले गये और वह भी इतना सामान लेकर? कैसे यह संभव हो पाया?" वे प्रश्न पर प्रश्न पूछते गये।

ग़रीब ने दीर्घ श्वास लिया। पहले ही उसने सोच रखा था कि उनसे किये जानेवाले प्रश्नों के उत्तर कैसे दूँ और क्या दूँ। उसने उनसे यों कहा "महाशयो, मेरा नाम शिवदास है। मैं कुंभीनस देश का हूँ। मैं छोटा-सा व्यापारी हूँ। लंबे अर्से से मेरी इच्छा थी कि

समुद्री व्यापार करूँ और लाखों कमाऊँ। किन्तु मेरे मित्र ऐसा करने से मुझे रोकते रहते थे। उनका कहना था "समुद्री व्यापार जोखिमों से भरा पड़ा है। कभी-कभी तो लाभ की बात छोड़ो, पूँजी भी समूल खोनी पड़ती है।" फिर भी मैं निराश नहीं हुआ। मेरी आशा पर पानी फिर नहीं गया। एक दिन अपने एक धनवान बाल्य-मित्र से मिला और कहा "जो भी कुछ भी कहे, समुद्री व्यापार करने की मेरी तीव्र इच्छा है। मैं यह इच्छा पूरी करके ही छोड़ूँगा। आवश्यक पूँजी मेरे पास नहीं है, कर्ज़ लूँ तो पता नहीं, चुका पाऊँगा या नहीं, इसी भय से पीछे हट रहा हूँ। अगर कोई मुझे अधिकाधिक धन देकर सहायता करे तो राक्षस-द्वीप में एक सप्ताह भर रहने के लिए भी सन्नद्ध हूँ।"

वह मित्र ऐसे साहस-पूर्ण कार्यों पर मरता
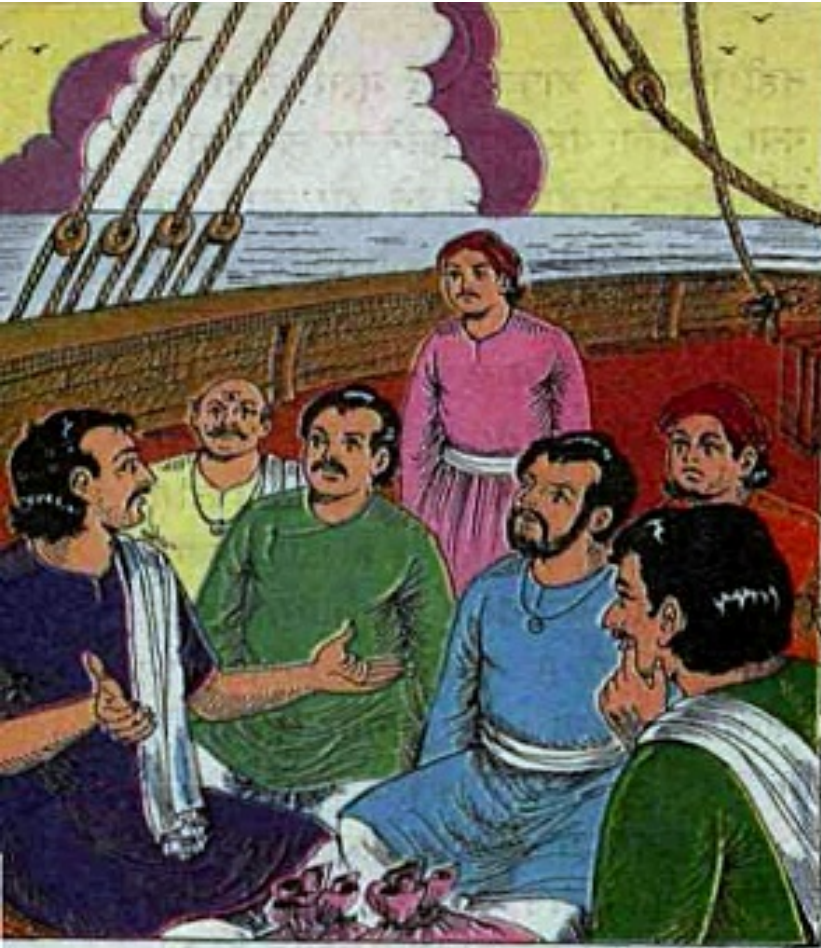
है। मैं यह जानता हूँ, इसीलिए मैंने उससे अपनी इच्छा बतायी। उसने तुरंत मुझसे वादा किया कि मुझे जो धन चाहिये, वह देगा। उसने अपना वादा निभाया भी। आहार पदार्थ और इतर सामग्री देकर मुझे इस द्वीप में उतारा। हमारे समझौते के अनुसार राक्षस-द्वीप से बाहर आने की जिम्मेदारी मुझपर ही थी। इस द्वीप में आये दस दिन हो गये। इन दस दिनों में अपनी जान को हथेली पर रखकर जहाँ उतरा, वहीं बैठा रहा। किसी नौका के आने का इंतज़ार करता रहा। उस भगवान से प्रार्थना करता रहा। आज मेरा भाग्य आपके आ जाने से चमक उठा।''

ग़रीब की आपबीती कहानी सुनकर घिरे लोगों ने आश्चर्य प्रकट किया और कहा ''दस दिनों तक राक्षस-द्वीप में ही रहे और बच गये। विश्वास ही नहीं होता। क्या असल में द्वीप में राक्षस है?''

''मैं क्या जानूँ? मैं तो तट से दस फुट भी अंदर नहीं गया। अंदर से मुझे कोई हलचल सुनायी नहीं पड़ी।'' शिवदास के नाम से पुकारे जानेवाले ग़रीब ने कहा।

जहाज़ में जितने भी लोग थे, सब आपस में इसी को लेकर चर्चा करने में लग गये कि राक्षस ज़िन्दा है या मर गया ? उसकी मृत्यु सहज थी या किसी से मारा गया?

ग़रीब ने बड़ी ही चतुरता से बात बदली और जहाज़ व जहाज़ में जो व्यापारी थे, उनके बारे में विवरण जानने लगा।

वह जहाज़ गरीब का स्वदेश कुंभीनस के पड़ोस में ही स्थित मातंग देश का एक व्यापारिक जहाज़ है। मार्ग-मध्य में पड़नेवाले चार-पाँच द्वीपों में वह ठहरेगा और सिंहल देश तक जायेगा। जहाज़ में जितने भी व्यापारी थे, उनमें से बड़ा व्यापारी था मणिकुंडल। ग़रीब के मन को उसने आकृष्ट किया। उस क्षण से वह मणिकुंडल के साथ ही रहने लगा और उसके व्यापारिक रहस्यों की जानकारी पाने लगा।

यों दिन गुज़रते गये और जहाज़ नारिकेल नामक छोटे द्वीप पर रुका। ''शिवदास, यहाँ नारियल, खोपर व रेशे से बनायी गयीं अलंकार - वस्तुएँ बहुत ही सस्ती मिलती हैं। हम जिन-जिन द्वीपों में जानेवाले हैं, वहाँ और सिंहल देश में भी इन वस्तुओं की बड़ी मांग है।'' कुंडल ने ग़रीब से कहा।

ग़रीब तुरंत उसके साथ द्वीप में गया और दोनों ने मिलकर बहुत चीज़ें खरीदीं और

जहाज़ में महफ़ूज़ रखीं।

इसके बाद व्यापार-संबंधी कामों पर जब द्वीप में घूम रहे थे तब मणिकुंडल का पाँव एक पथ्थर से टकरा गया। वह जमीन पर गिर गया। घाव की पीडा की वजह से उस रात को वह सो नहीं सका। बिस्तर पर लेटा वह इधर-उधर करवटें बदल रहा था तो अचानक उसने देखा कि एक आदमी उसके पास बैठा हुआ है। बत्ती की रोशनी को और बढ़ाते हुए उसने पूछा "शिवदास, इस आधी रात को यहाँ क्यों आये?"

ग़रीब ने धीमे स्वर में कहा "आपकी पीडा को देखते हुए मुझसे रहा नहीं गया। एक क्षण ठहरिये।" उसने मणिकुंडल के सिर पर बंधी पट्टी खोल दी और अपने कपड़ों में छिपाये मणि को बाहर निकाला। उस मणि को घाव पर रखा। दूसरे ही क्षण मणिकुंडल का दर्द दूर हो गया। उसने आश्चर्य-भरे स्वर में पूछा "शिवदास, यह सब क्या है? क्या तुम सचमुच व्यापारी हो?"

गरीब थोड़ी देर तक सकपकाता रहा, मौन रहा। फिर कहा "ऐसे प्रश्न का सामना करना होगा, इसीलिए अब तक मैंने यह काम नहीं किया। आपका दर्द मुझसे देखा नहीं गया, इसलिए यह काम करने पर तुल गया।" मणिकुंडल के हाथ पकड़ते हुए उसने कहा "महाशय, आप आयु में, अनुभव में, अच्छाई में मुझसे बड़े हैं, उत्तम हैं। मेरे गुज़रे जीवन के बारे में कुछ न पूछियेगा। अपनी वर्तमान स्थिति के कारणसंभूत व्यक्ति को अपने बारे में सब कुछ बताने के बाद ही, बाक़ी लोगों को बताने की मेरी इच्छा है। एक विषय मात्र आपको बताता हूँ। सुनियेगा। तब, अब, आगे भी मैं भगवान में ही विश्वास रखता हूँ, रखूँगा। मेरा अगाध विश्वास है कि भगवान मनुष्य के ललाट पर जो लिखता है, वही होगा, होकर रहेगा। मेरा यह विश्वास ही मेरी इस वर्तमान स्थिति का कारक है। मेरे व्यापार-जीवन में आप मेरे प्रथम गुरु हैं। मेरा विश्वास कीजिये और मुझे आशीर्वाद दीजिये।" हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए उसने कहा।

मणिकुंडल ने आश्चर्य से उसका कहा सब कुछ सुना और अप्रयत्न ही उसके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया।

(समाप्ति अगले अंक में)
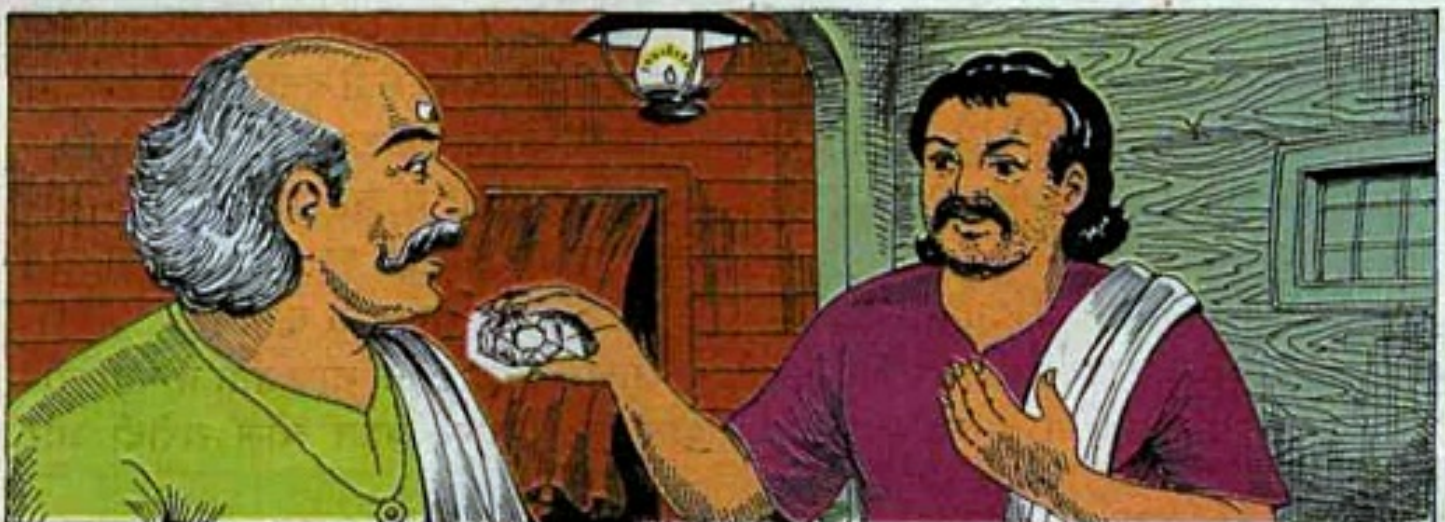
जितना धन उतनी चिकित्सा

एक गाँव में सोमशेखर नामक एक धनिक था। आसपास के गाँवों में उतना बड़ा धनिक कोई और नहीं था। फिर भी उसकी मदद करने कोई आगे आता नहीं था। वह अव्वल दर्जे का कंजूस था। कौव्वे को भी अन्न का एक कण भी खिलाने को तैयार नहीं होता था।

कंजूस सोमशेखर एक बार आँख की बीमारी का शिकार हुआ। उसकी आँखों से बराबर पानी बहता रहता था, आँखों में जलन होती थी। इस वजह से उसे भारी सिर-दर्द भी होता था। पाँव काँपते थे। वह ठीक तरह से देख नहीं पाता था।

पड़ोस के गाँव में एक वैद्य था। वह बहुत ही मशहूर वैद्य था। उसकी दवाएँ रामबाण मानी जाती थीं। उन दवाओं से अवश्य ही रोगी स्वस्थ हो जाता था। उसके सामने कोई दूसरा वैद्य टिक न सका। उसकी तारीफ़ घर-घर में होती थी।

इस वैद्य में एक विशेष गुण था। वह रोगी की स्वयं परीक्षा करता, उसकी स्थितिगतियों का अच्छा अध्ययन करता और बाद ही दवा देता था। पैसा भी ख़ूब वसूल करता था। ग़रीब को भी दवाएँ देता था, परंतु उनसे रक़म उतना ही लेता था, जितना वे दे पाते थे। धनिकों से तो ज़्यादा ही वसूल करता था।

कंजूस सोमशेखर उस वैद्य से बहुत नाराज़ था। एक बार जब वह बीमार पड़ा तो उस वैद्य से चिकित्सा करवायी। उसने पूरे के पूरे सौ रुपये उससे वसूल किये। कोई दूसरा चारा न पाकर वह रक़म मजबूरन उसे देनी ही पड़ी।

अब सोमशेखर को इस बीमारी की चिकित्सा करानी हो तो वह इस वैद्य से ही संभव है। क्योंकि आसपास के गाँवों में कोई दूसरा वैद्य था ही नहीं। इसी वैद्य से चिकित्सा करानी हो तो बड़ी रक़म देनी होगी।

इसलिए सोमशेकर ने एक उपाय सोचा।

पचीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

उसने ग़रीब बनकर उसके पास जाने का निश्चय किया। उसने फटे-पुराने कपड़े पहने। एक मैला-फटा कपड़ा सिर पर बाँध लिया। पान में दो आने रखे और वैद्य के घर लँगडाता होता हुआ गया। अपनी वेष-भूषा के अनुसार अशुद्ध भाषा में बोलते हुए उसने अपने रोग के बारे में बताया और बड़ी ही दीनता के साथ आवश्यक चिकित्सा करने की प्रार्थना की।

"मैं तुम्हारी बीमारी की चिकित्सा करूँगा। अवश्य ही तुम ठीक हो जाओगे। मेरे इलाज से तुम्हारी बीमारी दूर हो जायेगी। डरने की कोई बात नहीं, किन्तु मैं जो कहूँगा, तुम्हें करना होगा। चार मूली के कंद ले आना। चक्र के आकार में उन्हें टुकड़ों में काटना। उनपर नमक छिड़कना। तब उनसे पानी बाहर आयेगा। उस पानी में हींग मिलाना और पी जाना। फिर मूली के उन टुकड़ों को सुखाना और रात में खाना। कम से कम चालीस दिनों तक खाओगे तो अवश्य ही तुम्हारी आँख की बीमारी दूर हो जायेगी।" वैद्य ने कहा।

सोमशेखर घर लौटा और लगातार चालीस दिनों तक वैद्य के कहे अनुसार किया। किन्तु यह चिकित्सा-पद्धति बड़ी ही हेय, तुच्छ लगने लगी। नमक में मिलाये गये हींग और मूली का पानी पीना, मूली के सुखाये गये टुकड़ों को खाना, भला स्वादिष्ट खाना खाने-वाले को क्योंकर रुचिकर लगेगा? फिर भी उसने बड़ी ही सहनशीलता से नियम का पालन किया और चालीस दिनों तक वही खाता रहा, जो वैद्य ने बताया।

जैसे ही सोमशेखर का चिकित्सा-काल समाप्त हुआ, मिठाइयाँ और रुचिकर पदार्थ जमकर खाने लग गया। उसने आवश्यकता से अधिक खा लिया। इस वजह से उसमें पाचन-शक्ति कम हो गयी। खूब प्यास लगने लगी। पेट में असहनीय दर्द होने लगा। फिर

से वैद्य से मिलने की नौबत आयी।

सोमशेखर ने पुनः पुराना वेष धारण किया। पान में दो आने लिये वैद्य के पास गया। उसने वैद्य से कहा कि उसकी पुरानी बीमारी ठीक तो हो गयी किन्तु वह नये रोग का शिकार हुआ।

वैद्य ने सोमशेखर की नब्ज़ का मुआयना किया और कहा "आखिर इतना क्या खाया, जिसे तुम पचा नहीं सके। तुमने जो खाया, उसे जानने के बाद ही दवा दूँगा।"

"लड्डू खाये" सोमशेखर ने कहा।

"तुम्हारी इस हालत से स्पष्ट है कि तुमने बहुत-से लड्डू खाये होंगे। इतने लड्डू कहाँ से आये?" वैद्य ने ज़ोर देकर पूछा।

सोमशेखर ने बात बदलने के इरादे से कहा "वैद्यजी, पेट-दर्द सहा नहीं जा रहा है। पहले दवा दीजिये। दवा खाने के बाद बताऊँगा कि यह सब कुछ कैसे हुआ।"

"जिसने तुमसे इतने लड्डू खिलवाये, वह अवश्य ही अमीर होगा। जब तक तुम नहीं बताते कि वह अमीर कौन है, दवा देने का सवाल ही नहीं उठता। चिकित्सा करने की यह मेरी पद्धति है। जिसने खिला-खिलाकर तुम्हें रोगी बना दिया, क्या वह रोग की चिकित्सा के लिए पैसे दे नहीं पायेगा?" वैद्य ने नाराज़ होते हुए कहा।

"सोमशेखर ही वे व्यक्ति हैं। उनके यहाँ काम करता था। बहुत दिन गुज़र गये, इसलिए उनसे मिलने कल उनके यहाँ गया। लड्डू दिये तो मैं मना नहीं कर सका। वे लड्डू देते रहे और मैं खाता रहा" सोमशेखर ने कहा।

"अभी उसके पास जाओ और पचास रुपये ले आओ। इस दवा की क़ीमत पचास रुपये हैं। तुम्हारे लौटते-लौटते दवा भी तैयार रखूँगा।" वैद्य ने कहा।

"वैद्यजी, यह तो ग़लत बात हुई ना? उनके लड्डू भरपेट खाये। इस वजह से बीमार पड़ा तो इसमें उनकी क्या गलती है? उनसे ही इस बीमारी की चिकित्सा के लिए आवश्यक खर्च कैसे माँगूँगा? यह मुझसे नहीं होगा" सोमशेखर ने कहा।

"अगर तुमसे नहीं होगा तो मैं स्वयं उससे माँगूँगा और वसूल करूँगा।" कहते हुए वैद्य ने कोई चूर्ण सोमशेखर के मुँह में डाल दिया और पानी पिलाया। उससे कहा कि तुम्हारा अजीर्ण रोग अब जल्दी ही ठीक हो जायेगा। अब जा सकते हो।

चूर्ण को मुँह में डालने के बाद सोमशेखर

का मुँह एकदम जल उठा। जीभ थरथराने लगी। चक्कर आने लगे। कान निष्क्रिय हो गये। लगता था, बहरा हो गया। वह तुरंत घर पहुँचना चाहता था, इसलिए जल्दी-जल्दी घर की ओर जाने लगा। उससे चला नहीं गया। वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया और मुँह खोलकर देखा।

इतने में वैद्य सोमशेखर के घर गया। वहाँ उसे मालूम हुआ कि वह कहीं बाहर गया है और किसी भी क्षण आ जायेगा तो वह सोमशेखर की प्रतीक्षा में वहीं बैठा रहा।

कुछ समय बाद लडखड़ाता हुआ, हाँफता हुआ बड़ी मुश्किल से सोमशेखर घर पहुँचा। जब उसने अचानक वैद्य को वहाँ बैठा देखा तो घबराता हुआ बोला "आप! यहाँ!" कहता हुआ वह कुर्सी में बैठ गया।

वैद्य ने उसे पहचान लिया। उसे मालूम हो गया कि धनी सोमशेखर ही ग़रीब रोगी बनकर उसके यहाँ दवा के लिए आया। सोमशेखर की नीयत उसे बहुत खटकी। वह सोच भी नहीं सकता था कि थोड़े-से पैसों के लिए एक आदमी इतना गिर सकता है। लाचार ग़रीब अगर पैसे नहीं दे पाते तो इसके पीछे सबल कारण होते हैं। इसके पीछे उनका दारिद्र्य व विवशता है। वैद्य ने मन ही मन निर्णय कर लिया कि इस कंजूस धनिक से अधिक रक़म वसूल करके ही रहूँगा। इसे पाठ सिखाकर ही रहूँगा। कंजूसी भले ही कुछ हद तक ठीक हो, पर कंजूसी का नाटक करना अपराध है और इस अपराध के लिए अपराधी को सज़ा मिलनी ही चाहिये।

वैद्य नाराज़ हो कहने लगा "पहले से ही मुझे संदेह था कि तुम झूठ बोल रहे हो। क्योंकि यह बीमारी मेहनत करनेवालों और ग़रीबों को अपना शिकार नहीं बनाती। जब तुम आँख की बीमारी की शिकायत लेकर आये थे तब मैंने तुम्हें ग़रीब समझकर देशी दवा ही दी थी। तुम जैसे लोगों के लिए वह देशी दवा काम नहीं करती। तुम जैसे लोगों के लिए रुचिकर लेह्य, सुगंधित लेपन और तेल चाहिये। तुम्हारे अजीर्ण रोग की दवा भी भिन्न है। पैसों की चिंता मत करो। दिव्य औषध भरे पड़े हैं। मीठे रोगों के लिए रुचिकर दवाओं की आवश्यकता हैं।"

वैद्य ने सोमशेखर से खूब पैसे वसूल किये, क़ीमती दवाएँ दीं और चिकित्सा की।

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता : : पुरस्कार रु. १००

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, सितम्बर, १९९७ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

TAJY PRASAD

K. SUBRAHMANYAM

* उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। * '३० जुलाई, ९७ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। * अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। * दोनों परिचियोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास - २६.

मई, १९९७ की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **मैं मुस्काई पाकर तेरा सहारा**

दूसरा फोटो : **बहती धारा में साथ तुम्हारा**

प्रेषक : **ब्रजेन्द्र सिंह**

३/१, सर्वप्रिय विहार, नई दिल्ली - ११० ०१६.

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चंदा : रु. ७२/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज, वडपलनी, मद्रास - ६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process private Ltd., 188, N.S.K. Salai, Madras - 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras - 600 026 (India), Controlling Editor: NAGI REDDI.

Egg'मिनट

नन्हें-मुन्नों की दिमागी कसरत

इन दोनों तस्वीरों के बीच सात फ़र्क है.
देखो इन सबको खोज पाते हो कि नहीं.

अंडे में समाए हैं प्रोटीन, विटामिन और ११ खनिज तत्वों की शक्ति गुणभरी... जो तुम्हारे शरीर के लिए बहुत जरूरी.

संडे हो या मंडे, रोज़ खाएं अंडे.